SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

दोराह
राह ए वफ़ा

स्वेता परमार

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

ऐसे ही दुर्लभ उपन्यास (Novel) ,

प्रेरणादायक पुस्तक

(Motivational Book) ,

प्रीमियम बुक , प्रीमियम मैगजीन ,

और अन्य सभी तरह के ,

कहीं पर भी ना मिल पाने वाले

उपन्यास

और साहित्य को पढ़ने के लिए हमारे

टेलीग्राम ग्रुप और चैनल में

अवश्य जुड़े ।

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से

आप हमारे ग्रुप और चैनल

में जुड़ सकते हैं

https://t.me/hindilibrary

https://t.me/requestbookpdf

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

चैनल में जुड़ने के लिए

लिंक पर Click करें👇👇👇

https://t.me/books_request

English Books 📚

https://t.me/Google_Ebooks

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

दोराहा

(राहे ए वफ़ा)

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

स्वेता “निक्की” परमार

मेरे हमसफ़र, मेरे जीवनसाथी के लिए

जिन्होंने किसी भी परिस्थिति में

मेरा साथ और हाथ नहीं छोड़ा।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

मेरी सूरज (शहीरा), चाँद (योशिमा) और तारा (रैता) के लिए, जिनकी इच्छा थी कि मैं एक ऐसी कहानी लिखूँ, जो यथार्थ से सम्बंधित हो और सकारात्मक परिणाम लिए हो||

"उस पर यक़ीन है कितना हमें, वो जानता है पर..

जब थामना था हाथ तभी डोर खींच ली।"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

अभिव्यंजना

मैं 'स्वेता' उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना चाहती हूँ जिन्होंने हर पग पर मेरा साथ दिया। इस पुस्तक के माध्यम से पाठक मुझे मेरे विचारो के ज़रिये जान पाएंगे। मैं

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

शुक्रगुज़ार हूँ उन सभी व्यक्ति विशेष की जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया और इस पुस्तक के सन्दर्भ में मुझे योगदान दिया। चाहे वह लेखन में विचार डालने का हो या टिप्पणी देने का।

सर्वप्रथम मैं अपने हमसफ़र को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अद्भुत साथी होने की कला को आत्मिक तौर पर स्वरूपता दी है।

उनके होने से मुझे इस ज़िंदगी को जीवंतता के आधार पर लाने का अहसास हुआ। उन्होनें मुझे ये बताया कि मैं ... मैं हूँ। मेरे अस्तित्व का पूर्ण स्वरूप मेरे खुद के सही और ठोस होने से है| दबंग नहीं किन्तु सत्यता और सकारात्मकता के साथ कुछ भी हासिल किया जा सकता है| मुझमें ये अहसास जागृत करवाया कि अगर चाहो तो नामुमकिन कुछ भी नहीं है|

"संजय" मेरे सबसे बड़े आलोचक हैं, लेकिन बहुत बाद में मैंने यह जाना कि वो जानते थे मेरी क़ाबलियत और ये सनक कि अगर मुझे किसी काम में आँका जाए या मुझे किसी बात पर चुनौती दी जाए तो मैं जी जान से ख़ुद को साबित करने में जुट जाती हूँ|

वो मुझे चुनौती देते गए और मैं आगे बढ़ती गयी।

मैं धन्यवाद करना चाहूँगी मेरी परी "योशिमा" का, जिसने भावनात्मक रूप से मेरा साथ दिया और मेरी क्षमता को प्रोत्साहित किया।

मैं सहृदय आभार प्रकट करना चाहती हूँ अपने भाई 'विक्रांत राघव' का जिसने हमेशा मेरी काबलियत पर यकीन रखा और मेरे सहचर'S मेरे मित्रों का , जो हमेशा धैर्यपूर्वक मुझे सुनते है और सुधार में मदद करते है। मेरे दृष्टिकोण और नज़रिए को समझने के लिए मेरे समस्त परिवार को धन्यवाद देना चाहती हूँ।

सहृदय धन्यवाद,मेरे पाठकों की सुंदर दुनिया को जिन्होंने मुझे नया रूप दिया।

मेरे प्रकाशन और "पीयूष जी" की आभारी हूँ जिन्होंने मेरे सपने को जिंदा बना दिया। मैं आज जिस भी मकाम पर हूँ वहां एक अद्भुत समूह के लोगों से आशीर्वाद प्राप्त है।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

खासतौर पर मैं आभार व्यक्त करना चाहती हूँ मेरे गुरु एवं मार्गदर्शक - "पद्मश्री अशोक चक्रधर जी" का, जिन्होनें धैर्य मुझे सुना और मेरी लेखनी बेहतर बनाने में मदद की|

मेरे सभी माननीय लोगों का धन्यवाद जिनसे आध्यात्मिक मार्गदर्शन, प्रेम और ज्ञान प्राप्त कर मैं उन्हें सौहार्दपूर्ण नमन करती हूँ। अपने परिवार के और उन सभी करीबी लोगों के लिए नमन जो कि अब मेरे साथ नहीं हैं, परन्तु मेरी जिंदगी की सच्चाइयों की खोज करने में उन्होंने मेरी मदद की है और जो मेरे मन में अपनी छाप छोड़ गए हैं, जिसके माध्यम से मैं, आप सभी के साथ, सही समय पर वास्तविकता की खोज कर पा रही हों।

अपनी अंदरूनी आँखों से देखने के लिए और आत्मापूर्ण शब्द कानों से सुनने के लिए मेरे जीवन में बदलते पल क्षीणनीय हो रहे थे , उन्हें सम्भालने के लिए। सबका बहुत बहुत धन्यवाद,

आज मै जिस भी मुक़ाम पर हूँ वहाँ पर पहुँचने में मेरे माँ-पापा, परिवार और बेटी के अलावा मेरे हमराही का भी दिल से साथ है।

सादर..... स्वेता परमार "निक्की"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

परिचय

स्वेता परमार “निक्की” का जन्म अप्रैल 1976 में राजस्थान की “गुलाबीनगरी” जयपुर में हुआ। स्कूली शिक्षा भी यहीं से हुई।राजस्थान विश्वविद्यालय से इंग्लिश औनर्स किया, तदुपरंत हरियाणा के रोहतक स्थित महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से बी.एड. पूरी की। विवाह के बाद पहले दिल्ली और अब उत्तर प्रदेश में अपने परिवार के साथ रहती हैं।अपनी बेटी को अपना सबसे बड़ा मार्गदर्शक मानती है।

पेशे से बिज़्निस्वुमन होने के बावजूद उनका मन लेखनी में ही रमता है। उनकी पहली पुस्तक ‘द ज़ेस्ट्फ़ल हाइव’(अंग्रेज़ी) में, दूसरी पुस्तक ‘मेह की सौंध’(हिन्दी) में, तीसरी

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

पुस्तक 'द ग्लिसेनिंग सोल' (अंग्रेज़ी) में, चौथी पुस्तक 'छायात्मजा' (हिंदी) में है, पाँचवी पुस्तक- एक्स्प्रेशंज़....अन्मैस्क्ड (अंग्रेज़ी में) और छठी पुस्तक – स्वेतिमा (हिंदी में) है। इन सभी पुस्तकों में उन्होंने ज़िंदगी के तमाम अहसासों-भावनाओं को बड़ी सहजता से पेश किया है जिसे पाठकों ने ख़ूब पसंद किया है। उनकी रचनाओं एवं उनके द्वारा खींचे गए चित्रों को एक अंतरराष्ट्रीय मैगज़ीन 'डब्लू & आर्ट'(अंग्रेज़ी) में शामिल किया गया है और उनकी कविताओं व फ़ोटोग्राफ़ी को अंतर्राष्ट्रिया स्तर पर प्रकाशित पुस्तक 'द पोयट्री कैफ़े' (अंग्रेज़ी) में प्रकाशित किया गया है।

उनके मन से निकले विचारों को सहज रूप से काग़ज़ में उकेरने की प्रतिभा ने पाठकों को उनकी रचनाओं की ओर आकर्षित किया है और अब वो अपने प्रिय पाठकों के बीच एक उभरता नाम हैं।

पुस्तकें, ईबुक और ब्लॉग आपको गूगल में मिल जाएँगे।

thezestfulhive.wordpress.com

mehive.hindiblogs.net

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

अभिसार

कई बार ज़िंदगी में कुछ ऐसे लोग भी आपस में टकराते हैं जिन्हें दुनिया में सब कुछ आसानी से हासिल होता है किन्तु प्यार और भरोसा नहीं। कहने को तो कुछ लोग राजसी ठाठ के साथ जीते-रहते हैं और भरा पूरा परिवार भी होता है किन्तु फिर भी होते हैं एकदम अकेले, क्यूँकि स्थिरता नहीं होती उनमें। कारण या तो वो स्वार्थी बन, बहुत ज़्यादा की उम्मीद कर बैठते हैं या उनका अहं प्रमुख कारण होता है कि सब उनसे छूटता जाता है। उस वक़्त ज़रूरत पढ़तीं है खुद को सँभालने की और ये समझने की कि क्या ज़रूरी है खुद को स्थापित करने के लिए |

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

ऐसा कभी नहीं होता है कि अगर हम सकारात्मक सोच लेकर चलें तो काम पूरे न हो| अगर जिद पक्की हो तो नामुमकिन कुछ भी नहीं|

ऐसे ही दो लोगों की ज़िंदगी की कहानी है ये जिन्होनें ये सोचा कि उनकी क़िस्मत में भगवान ने इन दो चीज़ों के अलावा- जो कि जीने के लिए सबसे ज़रूरी है- सब कुछ लिखा था। और उनसे- कुछ भी सम्भाला नहीं गया। उन्होनें अपनी नासमझियों की वजह से अपनी ही जिंदगी की कद्र नहीं की और फिर एक समय ऐसा आया कि एक फैसले ने सब कुछ बदल दिया।

ऐसा होता है कि कभी कभी हम सोच नहीं पाते और एक भ्रम में जीना शुरू कर देते हैं, इसलिए सही रहता है जब सच सामने आता है और हम ख्वाबों से बाहर निकलकर धरातल पर आते है| वास्तविक दुनिया में और स्वप्निल संसार में इतना अंतर होता है जितना धरा और अम्बर में, पर्वत और समंदर में| ऐसा नहीं है कि महत्वाकांक्षाएं गलत होती है, किन्तु, हर बात..... चाहे ख्वाब हो या हकीक़त...... उनमें सामंजस्य बैठकर यथार्तवत जीवन में आगे बढ़ना होता है| अति हर चीज़ की बुरी होती है ये बात तो बालपन से ही सिखाई जा रही है हमें| शायद इसलिए क्यूंकि, कभी कभी मन महत्वाकांक्षाओं से भी आगे भागने लगता है और फिर सब कुछ गर्त में गिरता जाता है| हमारा वजूद, हमारी हस्ती, हमारा मान .... सब कुछ|

प्यार एक बेहद खूबसूरत अनुभूति है और इसका अहसास आपके रोम रोम में रोमांच भर देता है, जीने के प्रति और सजग कर देता है| हर पल एक खुमारी सी छाई रहती है| उस वक़्त सही, गलत कुछ समझ नहीं आता| बस एक ही व्यक्ति के आस पास जैसे सारी दुनिया सिमट आई हो| और कभी कभी वो प्यार जूनून बन जाता है कि व्यक्ति फिर बस उसी में खुद को ढूंढता है, फिर जैसे सारी कायनात उसे उसके साथी से मिलाने में लग जाती है लेकिन, कभी कभी वही प्यार नफरत में बदल जाता है जब उसे अपने ही साथी से अविश्वसनीय – विश्वासघात मिलता है|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

इस कहानी में नीलेश और खनक की जिंदगी में कैसे बदलाव आये और कैसे उन दोनों ने उन परिस्थितियों का सामना किया, इन सबका एक कहानी के रूप में वर्णन किया गया है, ये आजकल के सामाजिक प्रारूप पर निर्धारित एक कहानी है ऐसा कह सकते हैं बस पात्र बदल जाते हैं। हालाँकि, इसमें यथार्थ से किसी (निजी या विशेष) व्यक्ति विशेष का कोई संबंध नहीं है।

कई बार ऐसा होता है कि ना चाहते हुए भी हमें ऐसे निर्णय लेने पड़ते हैं जिसके बारे में हम कभी सोच भी नहीं पाते किन्तु, शायद वही हमारे लिए सबसे बेहतर होते हैं| हालांकि, जिंदगी कभी कभी ऐसा मोड़ ले लेती है जो हम कभी अपने विचारों या मजाक में भी नहीं सोच पाते| हमारे लिए भी कभी कभी कुछ घटनाएँ अप्रत्याशित होती है।

ऐसे ही अचानक क्या हुआ खनक और नीलेश की जिंदगी में........आइये इन सब से आपको रूबरू कराते हैं|

तो मुखातिब होइए खनक और नीलेश (की ज़िंदगी) से|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

1.

“हेल्लो !”

“हेल्लो !”

“जी कौन ?”

“मैं नीलेश!”

“ईश, उम्म्म मतलब निलेश ?!?”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हाँ! मैं ईश। पहचान तो लिया या फिर से मुख़ातिब कराऊँ खुदको?”

“हाहाहाहा। अच्छा !”

“तुम खनक ही हो ना।”

“जी बिलकुल सही पहचाना आपने निलेश जी ! मैं खनक ही हूँ?

“निलेश जी.... अच्छा हम्म, कैसी हो तुम? कहाँ हों ?”

“यहीं हूँ। इसी जहाँ में और बिलकुल सही हूँ।”

“कहाँ ग़ायब हो गयी थी तुम यार।”

“क्यूँ ?क्या हुआ , कोई काम था क्या ?”

“कैसी बातें करने लगी हो तुम?”

“कैसी बात कर रही हूँ। जो सच है वो पूछ रही हूँ।”

“इतनी बेरुख़ी से क्यूँ बात कर रही हो?”

“मैं ऐसी ही हूँ।”

“नहीं ऐसी नहीं हो।”

“अच्छा बहुत अच्छे से जानते हो मुझे।”

“हाँ जानता हूँ।”

बहुत तेज़ हँसी खनक, उसकी हंसी में एक टीस थी जैसे कोई मज़ाक़ किया गया हो। निलेश बस उसकी हंसी को ध्यान से सुन रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था ये कौनसा रूप है खनक का।जहाँ तक उसे याद था खनक तो अपने नाम के ही मुताबिक, बहुत हँसमुख और ज़िंदादिल लड़की थी। उदासी का तो नामोनिशान नहीं होता था उसकी जिंदगी में। हँसती, खिलखिलाती,हर वक़्त चहकती रहती थी। ग़ुस्सा तो कभी आता ही

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

नहीं था उसे । हमेशा बस समझाती रहती थी दूसरों को । इतना बोलती थी कि कभी कभी कहना पढ़ता था चुप रहने को।

हर क्षेत्र में पारंगत होने का शौक़ था उसे। पर आज जो खनक दिखी वो कोई और ही लगी।

बिलकुल बदली हुई, बहुत ज़्यादा गम्भीर और अजीब सी। ऐसा क्या हो गया जो वो इतना बदल गयी। पता करना चाहिए।आख़िर उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी वो या कि शायद हमसफ़र............।

पता नहीं ऐसा क्या हुआ इन पांच सालों में? इन सब सवालों के जवाब ढूँढने होंगे।

“तृष्णा। ज़रा मेरा फ़ोन लाकर देना ।” नीलेश ने तेज़ आवाज़ में पुकारते हुए कहा तो उसकी पत्नी दौड़ती हुई आईऔर पकड़ाया। साथ में ही रखा था पलंग के दूसरे किनारे पर लेकिन नीलेश की आदत थी ऐसी।

“चाय लीजिए।” तृष्णा ने कहा,

“हमम्म !”

“ क्या बात है परेशान हो बहुत। क्या हुआ?”

“आज खनक मिली थी।” नीलेश, परेशान सा बिना उसकी तरफ़ देखे ही बोला।

“ ये तो बहुत अच्छी बात है आख़िर आपकी तलाश पूरी हुई।”

“हमम्म !”

“फिर इतने उदास क्यूँ हो।”

“समझ नहीं आ रहा आख़िर खनक को हो क्या गया है। वो तो ऐसी ना थी।”

“क्यूँ ऐसा क्या हो गया।”

“वही तो समझने की कोशिश कर रहा हूँ।”

“अच्छा चाय तो पी लीजिए। ठंडी हो रही है।”

“यार यहाँ ज़िंदगी पर बन आई है और तुम्हें चाय की पड़ी है। तुम पीलो।”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“पर, अरे सुनो तो।”

मगर नीलेश ने तृष्णा की एक ना सुनी और चल दिया। तृष्णा ने प्याला लिया और रसोई में रख बच्चों के कमरे में चली गयी। उसके बेटे की परीक्षाएँ शुरू होने वालीं थीं।

नीलेश, कभी भी उससे ऐसे लहजे में बात नहीं करते थे इसलिए उसे थोड़ा अजीब लगा पर सोचा परेशान हैं, और ये सोचकर उसने अपना मूड ख़राब नहीं किया ! बच्चे को पढ़ाने में लग गयी वो आखिर परीक्षाएं शुरू हो रही थीं !

नीलेश बहुत परेशान था, कुछ समझ नहीं आ रहा था उसे , अब क्या करे , कैसे पूछे खनक से! अजीब पशोपेश में था किन्तु कुछ तो उपाय होगा, कैसे विकल्प निकाले वो! यही सब सोचते हुए नीलेश खनक के घर पहुंचा और उसे देखते ही खनक बोली:-

“आप यहाँ तक आ गए? आपको समझ में नहीं आता क्या ?”

“नहीं आता! बेवक़ूफ़ हूँ !”

पलट कर नीलेश ने भी जवाब दिया|

“चाहते क्या हो , क्यों परेशान हो इतना!”

“तुम्हे पता नहीं क्यों हूँ ?”

“मेरे बारे में सोचकर चिंता करने का हक़ खो चुके हो आप!”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अच्छा !कैसे खो चुका हूँ ??????

थोडा ठहरा फिर लम्बी सांस लेकर बोला:-

“खैर ये सब छोडो और मुझे बताओ आखिर बात क्या है , क्या कारण है इस उदासी का!”

“निलेश जी, प्लीज!”

“नो...... प्लीज और ये क्या निलेश जी , निलेश जी लगा रखा है !”

फिर वो वहीँ बैठ गया, खनक के सामने ! उसकी गतिविधियों को देखता रहा !

“ क्यों, आखिर आप क्यों कर रहे हो ऐसा !”

“ तुम्हें पता है!”

“ हमम ! क्या जानना चाहते हो? पूछो!”

“ तुम्हारी बेरुखी का सबब...........बस!”

“ क्या करोगे जानकर?”

“ बस अपनी उस खनक से मुलाक़ात चाहता हूँ जो हर वक़्त बेबाक हँसती मस्कुराती रहती थी , बिना किसी कारण के! कभी ना गुस्सा होती थी, ना नाराज़ , ना कभी रूखा व्यवहार होता था किसी से भी, ना कभी झगड़ती थी किसी से, बहुत प्यार से बात करती थी सभी से! मुझे वही चाहिए!”

“ वो अब नहीं है ! काफी साल पहले ही उसका वो स्वरुप खत्म हो चुका है!”

“ऐसे कैसे हो गया, बेकार की बकवास कर रही हो ! मैं क्या जानता नहीं तुम्हें!”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ हहहहहह!सच....आप जानते हो मुझे ? आर यू शुओर?”
और फिर से तेज़ हँस पड़ी खनक पर उसकी आँखों का दर्द और हँसी के पीछे की उदासी नीलेश से छुपी ना रह पाई!

“ किस बात का इतना दर्द ओढ़े बैठी हो, बताओगी नहीं, कभी तुम्हारा सबसे पक्का दोस्त हुआ करता था मैं, आज क्या इतना भी हक़ नहीं !”

“ हक़ .... हहहहह .... हमम्म... अच्छा.... हक़! अच्छा लग रहा है ये शब्द, पर मैंने किसी को भी अब ये अधिकार नहीं दे रखा, आपके बीवी-बच्चे हैं उन पर हक़ रखिये और जताइए, ... नमस्कार निलेश जी, मैं चलती हूँ| “

“ऐसे नहीं जा सकती तुम, समझती क्या हो खुद को, जो कह दोगी वो सबको करना होगा ये ज़रूरी है क्या, सब क्या ग़ुलाम हैं तुम्हारे, बहुत बोल लिया तुमने, अब बस करो और मेरी सुनो!”

“चिल्लाइये मत नीलेश जी, मुझ से ऊँची आवाज़ में बात करने का कोई अधिकार नहीं आपको| ढंग से बात कर सकते हैं तो कीजिये वरना नमस्ते|”

बहुत विचलित हो गया था नीलेश खनक की ऐसी बात सुनकर| खुद से पूछने लगा- ‘क्या यह वही खनक है?’

थोडा शांत हुआ नीलेश, हालांकि बेहद गुस्से में था फिर भी उसने खुद को संभाल लिया|वो समझने में पूरी तरह से नाकाम था कि खनक क्यूँ उससे इतनी बेरुखी और बदतमीज़ी से

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

बात कर रही है| थोडा जब संभला तो फिर बोला :-

“माफ़ी मांगना चाहता हूँ अपनी ऊँची आवाज़ को लेकर, पर इसका मतलब ये नहीं है कि मैं तुमसे कुछ पूछुंगा नहीं| मेरा सवाल अभी भी वही है.......क्या हुआ है तुम्हें?"

“कहा तो मैंने| क्या एक बार में आपको समझ नहीं आता? कुछ नहीं हुआ है मुझे और अगर हुआ भी है तो आप हैं कौन जिसे मैं बताऊ?"

“ईश .... ईश हूँ मैं, वही ईश जिसे तुम सब बताया करती थीं| चाहे कुछ भी कह लो तुम, मैं पूछुंगा और तुम्हें जवाब देना होगा खनक|"

“जाइए यहाँ से अभी आप ईश, मुझे कुछ नहीं कहना, कुछ नहीं , कुछ भी नहीं और कभी मत आना लौटकर| जाइए, प्लीज आप जाइये , मैं अकेली ठीक हूँ , बहुत खुश हूँ| आप जाइये|"

ये कहकर फूट फूट कर रो पड़ी खनक तो नीलेश ने आगे बढ़कर उसके चेहरे को एक हथेली से ऊपर उठाया और दूसरी हथेली से उसके आंसूं पोंछने लगा| न जाने अचानक क्या हुआ कि खनक उसके सीने से लिपट गयी और फिर और ज्यादा तेज़ रोने लगी| नीलेश बस उसका माथा सहलाता रहा, तब तक जब तक वह शांत नहीं हो गयी|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

इस बार फिर नीलेश ने कोशिश नहीं की, बल्कि, सोचा की बाद में या, फिर कभी पूछ लेगा| उसने प्यार से खनक को बैठाया और उसके लिए पानी लाया और फिर अपने हाथों से उसे पिलाने लगा| खनक ने भी अपने दोनों हाथों से पानी के गिलास को पकड़ लिया और जब अपने होंठों से हटाया तो वो थोडा शांत थी| दोनों हथेलियों से उसने अपनी आँखों को दबाया और फिर मूह ढांप लिया पर तुरंत हटा भी ली अपनी हथेलियाँ फिर एक लम्बी सांस ली| फिर नीलेश की तरफ पलटी और बोली :-

“चाय पिओगे ?"

“हाँ, पी लूँगा|"

“अदरक वाली, बिना चीनी की.............मुझे पता है|"

नीलेश के कुछ कहने से पहले ही खनक ने उसकी जिज्ञासा शांत कर दी| नीलेश को बहुत ताज्जुब हुआ कि कैसे खनक को अब तक उसकी पसंद नापसंद पता हैं, जबकि, उसे शायद ही कुछ खनक के बारे में पता हो|

“चाय लीजिये|"

नीलेश ने उसके हाथ से चाय का प्याला ले लिया और मुस्कुराकर कहा :-

“शुक्रिया!"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

"शुक्रिया कैसा, मुझे भी पीनी ही थी|"

"अच्छा! मतलब तुम्हें अपने लिए बनानी थी इसलिए मेरी लिए भी बना दी| हम्म, फिर तो दोगुना शुक्रिया|"

कुछ नहीं बोली इस बार खनक और चुपचाप चाय का घूँट पी लिया|फिर नीलेश की तरफ प्रश्नभरी नज़रों से देखने लगी.............

"यह बात तो तय है कि तुम मुझसे नाराज़ हो पर इतनी ज्यादा खफा क्यूँ हो ये नहीं समझ आ रहा....

ये सुनकर खनक झटके से उठी तो नीलेश ने उसका हाथ कसकर थाम लिया और बोलना ज़ारी रखा :--

....खनक अब बस्स्स,नहीं पूछुंगा अगर तुम नहीं बताना चाहोगी पर ऐसे हाल में भी तुम्हें नहीं देख पा रहा हूँ| खुश रहो वही काफी है मेरे लिए , मैं बाद में आता हूँ... मना मत करना प्लीज|"

कहकर नीलेश ने खनक के माथे से उसपर झूलती लटों को हटाया और धीमे से एक चुबन दे दिया ....फिर वहां से चला गया|

" शब्द आते हैं लबों पर मगर डर लगता है कुछ यूँ.......

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

.........कि रूह कांप उठी है उनके तेवर देख कर!"

2.

कई बार ऐसा होता है हम चाहते हैं कुछ और कहना, करना और हो जाता है कुछ और ही|

खनक की जिंदगी में भी कुछ ऐसा ही हुआ| आज फिर उसे अपना बीता वक़्त याद आ गया और वो अपनी यादों के भंवर में गोता लगाते हुए आठ साल पहले के ज़माने में चली गयी जब वो अपनी नौकरी के सिलसिले में बाहर गयी थी और वहां अचानक उसकी

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

मुलाक़ात उसके स्कूल और समकालीन बैच के कुछ बच्चों से हुई जो अब नौजवान थे :-- ---------------

चैपल ब्रिज का नज़ारा बेहद खूबसूरत था| प्राग शहर की लगभग सारी खूबसूरती समेटे हुए| शाम बेहद खूबसूरत लग रही थी, अकेले घूमते हुए भी अकेलापन बिलकुल भी नहीं लग रहा था खनक को| शाम के लगभग आठ बज रहे थे अभी सूरज डूबा नहीं था, उसने सोचा कुछ फोटोज अपने कैमरे में कैद कर ले .... यादें!!

“ओह्ह्हह्ह्ह्ह! कौन है?"

खनक तेजी से पलटी जब उसके काँधे पर किसी ने हाथ रखा|

“तुम लोग.......... उम्म्मम्म , एक मिनट , एक मिनट, लेम्मे गेस|"

वो काफी लोग थे, बाकी आगे बढ़ गए और आठ शांति से खड़े हो गए.......

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ठीक है, कोशिश करो|" उनमें से एक लड़की ने कहा|

“हम सब स्कूल में साथ थे न?” फुदकते हुए खनक बोली|उसकी ख़ुशी समेटी नहीं जा रही थी मानो उससे| फिर सबकी तरफ इशारा करते हुए बोली:-

“तुम नीलाक्षी, तुम दीक्षांत, तुम प्रीतेश, तुम दीपांकर, तुम प्रांजलि, तुम काव्या, तुम प्रियांश... और आप नीलेश|"

तीनो लड़कियां एकदम से आकर उससे लिपट पढ़ी...

“अरे वाह! आज भी तुझे सब याद है, तू भूली नहीं?"

“कैसे भूल सकती हूँ मैं अपने 'सहचर'S को?"

उसकी इस बात पर सब खिलखिलाकर हँस पड़े| किन्तु नीलेश थोडा चुप था| शायद उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था| तभी खनक ने आगे बढ़कर कहा:-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“आप तो आज भी वैसे ही हैं जैसे स्कूल में हुआ करते थे, ऐसा लग रहा है जैसे बस उम्र बढ़ी है|"

“लेकिन मैंने आपको नहीं पहचाना , क्या हम एक ही क्लास में पढ़ते थे?"

ऐसा लगा मानो किसी ने बुरी तरह से धक्का दिया हो खनक को| जिस इंसान को उसने अपनी जिंदगी से बढ़कर माना हर पल, वो व्यक्ति उसका नाम तक नहीं जानता|किसी तरह खनक ने खुद को संभाला और बोली :-

“क्या फर्क पढता है अगर नहीं पहचानते तो, अब जान लीजियेगा|" खनक ने वैसे ही अपनी खनकती हंसी में कहा|

“और तुम सब बताओ? क्या हाल चाल............. कितना अच्छा लग रहा है ना| मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि ऐसे हम सब फिर से मिलेंगे|” खनक की ख़ुशी छिपाए नहीं छिप रही थी|

“ हाँ , चलो पास में एक कैफ़े है वहां चल कर बैठ कर, इत्मीनान से बात करते हैं|" नीलाक्षी ने कहा|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हाँ, हाँ , चलते हैं|"

सब सहमत हो गए और चल पड़े, बतियाते, मस्ती करते, उछलते कूदते, किस्से सुनाते| किन्तु, नीलेश थोडा असहज था| वो समझ नहीं पा रहा था और ना ही उसे कुछ याद आ रहा था| उसके लिए खनक बस एक बहुत कामयाब औरत थी जो काफी जिंदादिल और खुशमिजाज़ थी| नीलेश को उसका व्यक्तित्व अच्छा लगा|फिर ‘कैफे ल क्रेमे' पर आकर सब लोग बैठ गए| वहां सबने ‘मचियातो’ और ‘क्रीम ब्रुल्ले’ मंगवाया|फिर हुआ दौर शुरू अपने अपने बारे में बताने का...........

नीलाक्षी एक कोरियोग्राफ़र थी और उसका खुद का एक डांस हाउस था|

दीक्षांत एक बिजनेसमैन था जो फर्नीचर और गृहसज्जा से सम्बंधित काम करता था|

प्रीतेश के कई फार्म हाउस थे जिनसे उसकी जिंदगी मज़े में कट रही थी|

काव्या एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम करती थी|

दीपांकर चार्टरड अकाउंटेंट था|

प्रांजलि कॉलेज में पढ़ाती थी|

और...............

नीलेश का अपना कोचिंग इंस्टिट्यूट था|

जब नीलेश का परिचय हुआ तो खनक ने सोचा :-’होना ही था , सबसे बुद्धिशाली और कुशाग्र हुआ करते थे ईश|'

(इसी नाम से आज तक वो उन्हें पुकारती आई है, खुद में)

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

इतने में ही दीपांकर ने कहा :- "यार तुम तो बिलकुल ही पहचान में नहीं आ रही थी वो तो नीलाक्षी ने पहचाना| कमाल का परिवर्तन हुआ है कसम से|"

"अच्छे में या बुरे में?" खनक ने ड्रामा करते हुए एक आँख ऊपर करके पुछा|

"अरे अच्छे ही अच्छे में, सच में सोचा नहीं था तुम ऐसे मिल जाओगी| जिंदगी सच में कभी कभी चौंका देती है और ये इत्तेफाक बेहद खूबसूरत है|" दीपांकर ने और जोड़ा |

"बस ओये, छेड़ ना, कुछ बाद के लिए भी छोड़ दे|" काव्या ने नकली डाँट लगाई|

और सब खिलखिलाने लगे|और फिर पसंद नापसंद और भी काफी कुछ बातें चल निकली और साथ में ये भी पता लगा की नीलेश को उससे सम्बंधित कुछ याद तो नहीं था और ऊपर से वो उसे बिलकुल भी नहीं पहचानते थे|

कुछ टूटा था खनक के अन्दर, दर्द हुआ था दिल में पर फिर संभल लिया उसने खुद को|

"तूने शादी क्यूँ नहीं की अभी तक?" दीक्षांत ने पूछा|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“जिसे चाहां वो नसीब में नहीं था और बाकी किसी को चाह नहीं पाईं, बस सिर्फ इसलिए नहीं की|"

“कौन था वो? क्या हम जानते हैं उसे? बता न?"

प्रांजलि जोर देने लगी तो खनक ने जवाब दिया :-

“छोडो ना ये सब बेकार की बातें अब, बहुत खुश है वो..... अब चलें? मेरा अपार्टमेंट पास ही है|"

“ठीक है, छिपा ले पर ,मैं भी पूछ के ही मानूंगी, तू जानती है मुझे|"

फिर सब खनक के अपार्टमेंट की तरफ चल दिए। हँसते, खिलखिलाते, कूदते, फांदते बिलकुल ऐसे मानो बचपन में लौट आये हो|

“बस उनकी ही थी , हूँ और रहूँगी उम्र भर....

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

एक साँस अटकी है कि अब तो कर ले वो यक़ीन!”

3

घर पहुँचकर सबने मिलकर रात का खाना बनाया, ऐसा लग रहा था कि वाक़ई किसी स्कूल या कॉलेज के बच्चे बन गए थे सब। वैसी ही धमाचौकड़ी, वही बचपन मानो लौट आया था जबकि सभी के अब ख़ुद के भी बच्चे हो चुके थे। खाना खाने के बाद सब कॉफ़ी पीने का सोचने लगे तो खनक ने कहा की वो बनाएगी और सब बोले……

“बेशक।”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

खनक ने एक कप में कॉफ़ी पाउडर लिया और थोड़ी चीनी डाली और फिर मुस्कुराते हुए तेज़ी से चम्मच घुमाने लगी। तभी वहाँ नीलेश आ गया।

"आप यहाँ? कुछ चाहिए?" खनक ने पूछा

"हाँ, एक ग्लास निवाया पानी।" नीलेश ने जवाब दिया

"जी, अभी देती हूँ।"

"नहीं, रुको, मैं ख़ुद कर लूँगा आप कॉफ़ी बनाओ।"

कहकर नीलेश ग्लास लेने के लिए आगे बढ़े। फिर थोड़ा रुके, और बिना पलटे ही पूछा :-

"आप मुझे कैसे जानती हो? क्या हम एक ही स्कूल में थे?"

"जी एक ही क्लास में भी थे। अब शायद काफ़ी बदलाव आ गया है इसलिए नहीं पहचान पा रहे है आप। मैं आपको अपने स्कूल के वक़्त की फ़ोटो दिखाती हूँ।"

कहकर उसने अपना फ़ोन खोलकर अपनी दसवीं की फोटो दिखाई।

"सॉरी। बिलकुल याद नहीं आ रहा।"

खनक मुस्कुरा कर बोली :-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“कमाल हैं आप। क्लास में रैंक भी आस पास रहती थी फिर भी....। कोई बात नहीं, अब जान लीजिएगा।”

“ हाँ , हाँ, ज़रूर.... अब तो बातचीत होती रहेगी। मुझे आपसे बात करना अच्छा लगा। जिस तरह से आप समझती हो और समझाती हो, उससे काफ़ी प्रभावित हुआ हूँ। उम्मीद है मित्रता क़ायम रहे।”

नीलेश ने जवाब दिया।फिर बोला :-

“ आपने शादी नहीं की अभी तक मतलब करियर से काफ़ी लगाव है...... महत्वाकांक्षी हैं आप।”

“ जी, आपने थोड़ा ग़लत समझा। ऐसा बिलकुल भी नहीं है|” खनक ने जवाब दिया |

“तो क्या कोई पसंद कर रखा है और ऐसे ही जो साथ रहने परंपरा चल पड़ी है ऐसा कुछ है या करनी ही नहीं है?” नीलेश ने हवा में तीर छोड़ा|

“ जी, करनी ही नहीं है।”

“क्यूँ? ऐसा क्यूँ?”

“बस, यूँ ही।”

“ नहीं ऐसा तो नहीं है क्यूँकि आपने कहा था कि आपको कोई पसंद था लेकिन उसकी शादी हो गई। क्या यही कारण है?”

“जी बिलकुल, लेकिन ये नहीं कहा था कि शादी हो गई|" खनक ने स्पष्ट किया|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अच्छा, अच्छा पर फिर क्या कारण है जो ना आप उसके पास हो और ना ही आगे बढ़ पाए|"

“क्यूँ? अगर वो नहीं मिले तो आगे बढ़ना ज़रूरी है क्या ?" खनक की आवाज़ में थोडा सा रोष था|

“नहीं, नहीं मेरा मतलब था, अगर उसने आपको छोड़ा तो आप भी तो आगे बढ़ सकते हो|" नीलेश ने बात संभाली|

“हाहाहा, कभीं मुझे पकड़ा ही कहा था जो छोड़ेंगे|" खनक कहती हुई फ्रिज की तरफ चल दी थी|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

नीलेश सोच में पढ़ गया कि इतनी बिंदास, हँसमुख लड़की और अकेली। ऐसा कैसे हो सकता था? शायद नीलेश को खनक अच्छी लगने लगी थी। कुछ कशिश तो थी उसमें|

" चलिए कॉफ़ी तैयार है, ईश|"

नीलेश की तन्द्रा भंग करते हुए खनक ने कहा|

"ईश...........हम्म्म्म, नाइस नेम|"

खनक एकदम से शर्मा सी गयी, "ईश" के ऐसे छेड़ने पर| उसके हाथ कांपने लगे तो नीलेश ने पास जाकर कहा:-

"अरे रे संभल के, फ़ैल जाएगी कॉफ़ी|"

अचानक से नीलेश ने लगभग गिरने वाली ट्रे को संभाला और मेज़ पर रख दिया फिर खनक के काँधे पर हाथ रखकर बोला:-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“आज मुझे वाकई आपका दिया ये नाम बहुत अच्छा लगा, इसीसे पुकारा कीजियेगा आप हमेशा|"

खनक नज़र ऊपर नहीं कर पा रही थी, वो बोली :-

“जी, बाहर चलते हैं सब इंतज़ार कर रहे होंगे|"

“ हां, ज़रूर| डरिये मत मुझसे, मैं कुछ गलत नहीं करूँगा| बस जानना चाहता हूँ वो अनलक्की व्यक्ति कौन है जिसकी किस्मत में आप नहीं थीं| और वो खुशनसीब भी जिसके लिए आपने अपनी सारी उम्र दाव पर लगा दी है|"

“क्या करेंगे आप जानकार अब, कोई फायदा नहीं उन बातों का ....|”

थोड़ी व्याकुल हो गई खनक|

“हाँ मुझे समझना चाहिए, मैं ऐसे कैसे आपकी जिंदगी में दखल दे सकता हूँ जबकि अभी कुछ घंटों से जाना है|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“पर मैं तो कई दशकों से जानती हूँ, खैर चलिए चलते हैं|"

नीलेश ने भवें ऊपर की जैसे समझने की कोशिश कर रहा हो| फिर उसके साथ बाहर चल दिया|

“हाँ भाई, हो गई जान पहचान?" दीपांकर बोला|

“हाँ भाई, कोशिश तो कर रहा हूँ|" नीलेश ने जवाब दिया|

“तो कितनी कामयाब हुई... हुह|"

आँख घुमाते हुए प्रांजलि ने पुछा तो खनक की आँखें हैरानी से विस्फारित हो गई और नीलेश ने हँसते हुए कहा:-

“कोशिश जारी है|"

“ह्म्म्म ह्म्म्म , सही है भाई ऑल द बेस्ट|” आँख मिचकाते हुए दीक्षांत बोला|

खनक को कुछ समझ नहीं आ रहा था या वो ना समझने का नाटक कर रही थी ... ये बात सिर्फ़ वो जान सकती थी। पर उसने फिर कुछ नहीं कहा और सबको कॉफ़ी के मग

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

पकड़ाए।

“कमाल है यार। तू शेफ़ है क्या? खाना हो या डेज़र्ट या ड्रिंक्स सबमें कमाल है तू।”

काव्या ने इस बार अपना मत दिया, जो इतनी देर से लगभग चुप थी। इस बात में सबने उसका साथ दिया। काफी देर तक ऐसे ही बातें चलती रही|

अब सब जाने के लिए कहने लगे लेकिन, कल दोबारा मिलने का वादा लेकर|

नीलेश ने भी हँसते हुए धीमे से सिर्फ़ खनक से कहा :-

“आपसे अकेले में मिलना चाहता हूँ| क्या आप मिलोगी?"

खनक ने एक पल भी नहीं लिया सोचने के लिए और तुरंत कहा :-

“जब चाहे आ जाइये या जहाँ आना हो बता दीजियेगा| मैं पहुँच जाऊँगी|"

मुस्कुराकर उन्होंने हाथ मिलाते हुए एक-दूजे से उस रात के लिए विदा ली, क्यूंकि, सुबह तो उन्हें मिलना ही था|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

"एक ख़्वाब थे संजोये कब से अपने जहाँ के.....।

ना जानते थे कि यूँ भी कभी होगी मुलाक़ात!!!!

4.

दरवाज़े पर लगी घंटी बजी| खनक की आँख खुली, सुबह के 7 बजे थे| उसे लगा दूधवाला आज जल्दी आ गया| वो ऐसे ही आँखें मलती दरवाज़े पर पहुंची और दरवाज़ खोलकर हाथ आगे बढाया कि बोतल लेले दूध की पर कुछ नहीं आया उसके हाथ में, तब जाकर उसने आँख खोलकर देखना चाहां तो पूरी ही आँख खुली रह गयी.........सामने ईश खड़े थे| वो बस इतना ही बोल पायी :-

" आप, अभी, इस वक़्त.....यहाँ, मुझे लगा.....आप अंदर आइये मैं अभी आती हूँ|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

और अन्दर भाग गयी| नीलेश को भी हँसी आ गई| वो मुस्कुराते हुए अन्दर दाखिल हुआ और सोफे पर बैठ गया फिर कुछ सोचकर उठा और रसोई में चला गया|

"ईश, ... ईश, ... कहाँ हैं आप?"

"यहीं, हमारे लिए कॉफ़ी बना रहा था|"

"अरे, आपने क्यूँ बनाई मैं बस आ ही रही थी|"

"पी लो, थोड़ी बहुत आती है बनानी हमें भी|"

कहकर नीलेश ने प्याला खनक को पकडाया| खनक नीची नज़रें किये बैठी थी| उसकी ये अदा भी नीलेश को बहुत भायी| और उसके मुंह से निकला :-

"क़यामत सी लग रही हो आप, ये हया ओढ़े ....हम सोच भी ना पाए थे की आपका ऐसा रूप भी देखने को मिलेगा| सचमुच कमाल हैं आप|"

फिर कुछ सोचते हुए बोला:-

"मुझे ताज्जुब हो रहा है कि मुझे आप याद कैसे नहीं?"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

खनक ने धीमे से कहा:-

“क्यूंकि, मैं शांत रहती थी इसलिए बहुत कम लोगों को याद हूँ मैं| आप क्यूँ सोच रहे हैं इतना?”

“क्यूंकि, इतने साल बर्बाद हुए मेरे, मैं भटकता रहा वरना शायद आज जिंदगी कुछ और होती|”

“शायद मेरी भी|'

पर इस बार कुछ नहीं कहा नीलेश ने और कॉफ़ी के प्याले के साथ दोनों की बातें चल निकली| नीलेश को बड़ा ताज्जुब हुआ था ऊसके बारे में इतना जानकार और खासकर यह कि वो उससे इतना प्यार कर बैठी (बेशक एकतरफा) कि अपनी सारी जिंदगी कुर्बान करने के बारे में सोच लिया..| नीलेश ने उसका हाथ थाम लिया| सिहर गयी खनक| नीलेश ने कहा :-

“घबराओ मत, अब नहीं जा रहा मैं कहीं भी| पहले बता देती तो शायद हमारे बच्चे भी होते|" कहकर ठहाका लगा कर हँसने लगा और खनक शर्माते हुए उठ कर भागने लगी तो नीलेश ने उसको पकड़ लिया और बोला :-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“उस दिन तुमने कहा था पकड़ा ही कब था तो लो पकड़ लिया|" कहते हुए उसके माथे को प्यार से चूम लिया| खनक फिर खुद को रोक नहीं पाई और नीलेश के सीने पर अपना माथा टिकाते हुए बोली :--

“शुक्रिया ईश, मेरी दुआ आज क़ुबूल हुई|' और फिर खनक ने अपनी आँखें बंद कर ली और वैसे ही दोनों सोफे पर बैठ गए| काफी देर तक दोनो ऐसे ही बैठे रहे और बातें करते रहे कि अचानक.........खिड़कियाँ खड़खड़ाने लगीं।

बाहर तेज़ तूफ़ान आने लगा| इतनी तेज़ बारिश हो रही थी| बाहर देख कर ऐसा लग रहा था जैसे पता नहीं क्या होने वाला है, बहुत भयंकर, मुसलाधार बारिश हो रही थी| ऐसे में अभी निकलना सही नहीं था|

“मैं खाना बना लेती हूँ| बाद में बारिश थमते ही निकल चलेंगे|" खनक ने कहा|

“ठीक है, मैं ऑफिस में बोल देता हूँ कि मुझे देर हो जाएगी|" नीलेश ने भी कहा|

फिर खाना बनाने के लिए उसने नीलेश की राय ली तो उसने कहा :-

“जो भी तुम खाओ वही बना लो, मुझे सब पसंद है|"

“अच्छा दाल, चावल, सब्जी, रोटी खायेंगे या कोई विदेशी व्यंजन ही बनाऊं?”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अरे जो भी बनाओ तुम, सब खा लूँगा............तुम्हें भी|" एक आँख मिचकाते हुए नीलेश ने कहा|

“उसके लिए तो इंतज़ार करना पढ़ेगा ईश| हाँ खाना बनती हूँ अच्छे से आपके लिए|" हँसकर खनक ने उसका भ्रम मिटाया|

“क्यूँ डरती हो क्या?'

“कुछ काम शादी के बाद ही करुँगी, ऐसा सोचा था और बेशक आपसे ही करुँगी यह भी, तभी आज तक इंतज़ार किया है|”

“क्या बात है..... अच्छा लगा सुनकर बहुत, वाकई यू आर ऑसम|”

“शुक्रिया, शुक्रिया|"

कहकर खनक रसोई में चली गयी और नीलेश उसके अपार्टमेंट को तस्सल्ली से देखने लगा| थोड़ी देर में खनक ऑरेंज जूस लेकर आई और उसे थमाते हुए बोली:-

“बस कुछ महीने हूँ यहाँ फिर काम पूरा होते ही आ जाऊँगी वापस|” फिर थोडा विराम लेकर बोली.......... "आप इंतज़ार करोगे मेरा?"

“तुम्हें शक है क्या? जब तुम मेरे लिए खुदको संभाले रख सकती हो अब तक, तो मैं भी कर सकता हूँ मैडम|" और तेज़ तेज़ हंसने लग नीलेश..........

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

"सच में, बहुत प्यारी हो वैसे| अच्छा, ये बताओ, तुम्हें पूरे जहाँ में से सिर्फ मुझमें ऐसा क्या ख़ास दिखा कि तुम किसी और की नहीं हो पाई?"

"पता नहीं, कभी सोचा नहीं। पर हाँ ज़िद थी की आपके लायक बनना है एक दिन।"

" हाहाहाहाहाहा।" बहुत तेज़ ठहाका लगाकर हँसा नीलेश।

"रहने दीजिए मैं कुछ नहीं बता रही आपको। खाना लगाती हूँ, बारिश भी अब कम हो रही है।"

" ठीक है, लगाओ। मैं हाथ धोकर आता हूँ।" नीलेश ने उसके गाल खींचते हुए कहा|

फिर उन दोनो ने 'लंच' किया और जाने के लिए निकलने से पहले नीलेश ने खनक से पूछा:-

"क्या मुझे तुम्हें गले लगाने का अधिकार है?"

और बाहे खोल कर खड़ा हो गया। खनक लगभग दौड़ती सी आई और नीलेश के सीने से चिपक गई। दोनो ने कसकर एक दूसरे को थाम लिया और प्यार की बारिश होंठों को भिगोकर उनके माध्यम से हो गयी। फिर जब दोनों को थोड़ा होश आया तो खनक शर्म के मारे नीलेश को देख नहीं पा रही थी। नीलेश ने अपने कॉलर ठीक किए और बोले :-

" मीठे के लिए शुक्रिया मैडम। चलो अब बारिश रुक गयी है तो चलते हैं। बोलो?"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“जी, चलिए।”

खनक बस इतना ही कह पाई। और वो लोग निकल पड़े वहाँ से।

फिर तो मुलाक़ातों का सिलसिला चल निकला और प्राग की सुंदरता को उन सब दोस्तों के साथ खनक ने जो पंद्रह दिन बिताए वो काफ़ी यादगार बन गए थे और फिर उन सबको वापस भारत लौट कर आना था। वो पंद्रह दिन खनक की ज़िंदगी के मानो सबसे ख़ूबसूरत बीते पंद्रह साल जैसे थे।

हवाईअड्डे पर सबको विदा करने के लिए गई थी खनक। नीलेश ने जब विदा लेते वक़्त उससे हाथ मिलाना चाहा तो सुबक पड़ी खनक।

“नहीं खनक, ऐसे नहीं रोते। बस कुछ ही समय की बात है। और खनक के आँसू पोंछ कर उसे कसकर गले लगा लिया।

और फिर वो चला गया..........

“ कैसे कटे थे दिन अब तक बिना उनसे मिले.....

जीते हुए मरे थे या मरकर जिए हैं हम।”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

5.

तभी दरवाज़े पर लगी घंटी बजी और खनक अपने ख़्यालों से बाहर आई। वो उठकर आई और खोला तो देखा क्रिस्टीना आई है, शायद उसे कुछ काम होगा या ऐसे ही आई होगी ...उम् पता नहीं उसने मन में ही सोचा|

“हे खनक, आई नीड योर फेवर टुडे|(हे खनक, मुझे आज तुम्हारी मदद चाहिए|)"

“येह, स्पीक अप हाउ कैन आई हेल्प यू? (हाँ, बताओ मैं तुम्हारी किस तरह मदद कर सकती हूँ?)|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“फ्यू ऑफ़ माय फ्रेंड्स आर कमिंग टुडे फॉर लंच एंड मॉम हेड इनवाईटेड फ्यू गेस्ट्स एज वेल, सो इट वुड बी सो काइंड ऑफ़ यू इफ यू विल अलाऊ मी टू होस्ट देम एट योर होम| प्लीज, आई विल बी हाईली ग्रेटफुल| (आज मेरे कुछ दोस्त दोपहर के खाने पर आ रहे है और माँ ने भी आज ही उनके कुछ मेहमानों को बुला लिया है, तो क्या आज दोपहर के लिए मुझे आपके घर में उन सबको खाना खिलाने तक के लिए रहने की इजाज़त देंगी| मैं आपकी बहुत आभारी रहूंगी|)”

“डोंट बी सो फॉर्मल क्रिसटी, ऑफ़ कोर्स यू कैन| (इतना औपचारिक होने की आवश्यकता नहीं है क्रिसटी, तुम कर सकती हो|)”

“ओह! यू आर सच अ हम्बल लेडी, में गोड ब्लेस यू एंड योर एव्री विश कम ट्रू| (आप बहुत ही दयालु महिला है, मैं भगवन से प्रार्थना करती हूँ कि आपकी सारी इच्छाए पूरी करे|)"

“थैंक्स अ टन डियर| (बहुत शुक्रिया|)”

उसके बात क्रिस्टीना वहां से चली गयी और खनक ने अपना सारा घर साफ़ चमका दिया फिर चाबी पड़ोस में क्रिस्टीना को देकर ऑफिस के लिए रवाना हो गयी|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

वैसे तो वो भारत में ही रह रही थी अब किन्तु, उसके पड़ोस में एक फिन्निश परिवार रहता था| उनकी बेटी क्रिस्टीना, खनक से काफी छोटी थी लेकिन, बहुत बनती थी आपस में दोनों की|

अपने ऑफिस पहुंचकर उसने उस दिन के लिए अपॉइंटमेंट्स और मीटिंग्स देखीं और अपने काम में लग गयी| आज उसे इंटरव्यूज लेने थे और एक जगह चीफ गेस्ट बनकर भी जाना है| इसलिए उसने सोचा पहले और काम निपटा ले और इसलिए उसने फाइल्स अपने केबिन में मंगवाई जिसमें उसके बस सिग्नेचर ही होने थे क्यूंकि देख कर पढ़ तो उसने पहले से ही लिए थे| सिग्नेचर कर ही रही थी कि उसके फ़ोन की घंटी बजी, बिना देखे ही उठाया और बोली :-

"हम्म, कौन?"

"नीलेश|"

"सॉरी, आई एम बिजी, टॉक टू यू लेटर|" और उसने फ़ोन रख दिया|

तुरंत फिर फ़ोन की घंटी बजी, फिर दुबारा.........तीसरी बार ....चौथी बार.......पता नहीं कितनी बार पर खनक ने फ़ोन को 'साइलेंट मोड' में रख दिया था|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

हाँ! बीच बीच में देख रही थी की कहीं और से तो ज़रूरी कॉल नहीं आ रहा| अभी आधा घंटा ही हुआ था कि फ़ोन करने वाला खुद सामने आ गया......

हाँ , सही पहचाना नीलेश ही था और सीधे खनक के सामने आ कर खड़ा हो गया| पीछे पीछे चपरासी भी था बोला:-

“मैडम बहुत कोशिश की रोकने की पर सर माने नहीं बोले..."

बीच में ही खनक ने हाथ ऊपर कर उसे चुप रहने को कहा और बोली:-

“तुम जाओ और दो चाय भिजवा दो|" फिर नीलेश को देखकर बोली :- "आप बैठिये|"

“मैं यहाँ बात करने आया हूँ|"

“हांजी, कहिये|"

“समझती क्या हो खुद को?"

“जो भी समझती हूँ , वो हूँ मैं| आप बताइए.कैसे आना हुआ यहाँ"

“तुम ऐसे कैसे कर सकती हो मेरे साथ| इस तरह बेईज्ज़ती, तुम्हें हो क्या गया है|"

“हहहहहाहा , बेईज्ज़ती, ह्म्म्मम्म अच्छा सॉरी, माफ़ी मांगती हूँ| ठीक|"

“ये किस तरह से बात कर रही हो तुम? तुम तो ऐसी नहीं थी|”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“मैं ऐसी ही हूँ, आप बताइए ऐसा क्या ज़रूरी काम है जो आप इतने बेचैन हैं?"

“पूछना था तुमसे, मेरी खनक कहाँ है?"

“आपकी खनक.......... कबसे? आई थिंक यू आर मैरिड विद किड्स|"

बिलकुल शांत हो गया नीलेश कुछ देर के लिए| ऐसे मानो उसे कुछ समझ ना आया हो कि क्या कहना चाहिए उसे| पर फिर बोला :-

“हाँ, सही कहा तुमने| शादीशुदा हूँ बच्चे हैं पर परिस्थितियां कुछ ऐसी थी कि करनी पड़ी मुझे और किसी तरह बस निभा रहा हूँ| वरना सिर्फ तुम हो जिसका इंतजार किया है और प्यार भी......... भरोसा करो खनक| मैं धोखेबाज़ नहीं हूँ|"

“ओह प्लीज, ईश! क्यूँ इतना झूठ बोल रहे हैं आप, बच्चे भी क्या ज़बरदस्ती हुए हैं आपके?"

“यार अब शादी हुई है तो ज़िम्मेदारी है न तो वो उसी का हिस्सा हैं बस ....|"

“जस्ट... कीप.......|"

और अन्दर ही अन्दर कुछ बोला शायद खनक ने|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“मानता हूँ तुम जैसा नहीं हूँ और ना ही इतनी ताक़त है कि अकेले रहने का साहस जुटा पाता| पर यकीन मानो प्यार तुमसे किया है बस और किसी से नहीं|"

“ बस कीजिये, आप किसी के पति और पिता हैं| आपको ऐसी बातें करना शोभा नहीं देता नीलेश जी|"

“क्या तुम कभी माफ़ नहीं करोगी मुझे?"

“आप मेरे कुछ नहीं हैं जो मैं आपको कोई सजा दूं या खफा हो जाऊँ| आप मेरे ईश नहीं बल्कि किसी और के जीवनसाथी हैं नीलेश और मुझसे प्लीज तमीज में रहकर बात कर सकते हैं तो ठीक है वरना आप जा सकते हैं| मुझे बहुत काम करना है|" खनक थोड़ा ग़ुस्से में थी।

“हम दोस्त तो रह सकते हैं न........... प्लीज|” नीलेश ने फिर कोशिश की।

“आपसे दोस्ती भी नहीं चाहिए मुझे।” खनक ने उसकी तरफ़ देखे बिना बोला।

“मुझे खुद से इतना दूर मत करो| बहुत मुश्किल से मिली हो तुम वापस|" नीलेश की कोशिशें जारी थी।

“अच्छा? आपने काफी कोशिश की ढूँढने की क्या? ओह्ह्ह्ह आई ऍम सो सॉरी मेरे कारण इतनी तकलीफ हुई|" हाथ जोड़ते हुए खनक ने कहा।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“बस करो खनक, इतनी कडवाहट कैसे रख सकती हो तुम मेरे लिए| तुमने तो कहा था तुमने सिर्फ मुझसे प्यार किया था ....क्या वो सब झूठ था|" नीलेश झल्ला कर बोला।

इस बात पर बहुत तेज़ी से हँसी खनक और फिर लगभग रोते हुए बोली :-

“यही तो दिक्कत है कि आज तक आगे नहीं बढ़ पा रही| धोखा नहीं दिया जा रहा| पर एक दिन बढ़ जाऊँगी मैं भी आगे| कोई तो बनाया होगा भगवान ने जो ,मुझे सच में प्यार करे और मैं भी उसे कर पाऊँ|"

“प्लीज पुरानी बातें छोड़कर आगे बढ़ें .....बस जानकार ही बनकर सही, प्लीज|" नीलेश बोला।

कुछ देर सोचकर आखिर खनक ने हाथ बढ़ा ही दिया और छूते ही काँप गयी| आज भी सिर्फ ईश से ही सिहरन होती है शरीर में| उसने खुद को संभाला फिर ईश से बाद में मिलने को कहा और अपने लिए दूसरी चाय मंगवाई|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

घर पहुंचकर नीलेश ने सीधे अपने स्टडी में जाकर कुर्सी खिंची और आँखें बंदकर के बैठ गया|आज शायद उसे अपनी गलती का या कह सकते हैं कि पाप का अहसास हुआ था जब खनक ने उसे सिर्फ एक जानकार मान कर आराम से बात की थी| उसे आज से आठ साल पहले वाली सब बातें याद आने लगी| और फिर वो भी चला गया अपने अतीत का सफ़र करने........

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

6.

" लगता हैं यूँ मानो कि अब ज़िंदा नहीं हैं हम.....

उसने जबसे मुझसे बात छोड़ने की... की !!"

उसे याद आया जब वो लोग प्राग से वापस आ रहे थे| बहुत रोई थी खनक और फिर विदा ले ली थी उससे| हमेशा की तरह उसे लगा था कि खनक भी उन लड़कियों जैसी ही है जो टाइम पास के लिए प्यार के रिश्ते बनाती हैं| और दोस्तों के सामने भी वो यही कहता था :-

"पता नहीं ऐसा क्या आशीर्वाद है भगवान् का कि मुझे कभी किसी लड़की के पास नहीं जाना पड़ता बल्कि, वो खुद ही मेरे पीछे आ जाती हैं|"

और दोस्त भी उसे देखकर रश्क करते थे| प्रीतेश, दीक्षांत और प्रियांश हमेशा यही कहते रहते थे कि-

"यार हमें क्यूँ नहीं मिलती ऐसी लड़की, बल्कि हमें तो भगा और देती है|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

बस दीपांकर हमेशा उन सब से अलग मत रखता था| जब भी वो लोग ऐसी बातें करते वो अनसुना सा कर देता था| पर इस बार उसे अच्छा नहीं लगा था नीलेश का ऐसे मिया मिट्ठू बनने के चक्कर में खनक की हंसी उडाना, आख़िरकार वो बोल ही पड़ा:-

“खनक के भावों की अगर इज्ज़त नहीं कर सकते तो हंसी तो ना उड़ाओ कम से कम| कैसे दोस्त हो तुम सब? और तुम नीलेश तुम तो बहुत नज़दीक हो उसके, तुम जानते हो वो तुम्हें आदर्श मानती है| फिर भी तुम कैसे....|"

“रिलैक्स दीपांकर, रिलैक्स.......तुम क्यूँ इतने गर्म हो रहे हो? वो अपने घर में है और उसे कोई नहीं कह रहा जाकर|” प्रियांश ने कहा|

“हाँ, ठीक है पर ऐसे किसी की भी भावनाओ का मजाक नहीं उडाना चाहिए | क्या पता किसी दिन तुम्हारे साथ भी ऐसा हो जाए| तुम खुद मजाक बन जाओ| थोडा सोच कर बोला करो तुम लोग|" दीपांकर ने पलटवार किया|

“अच्छा भाई, माफ़ी........अब शांत हो जाओ, ताकि चलें| भारत में भी लोग इंतज़ार कर रहे हैं| और वैसे सही कहा तूने, खनक ने पास नहीं आने दिया यार| कुछ ज्यादा ही सनकी है|" नीलेश भी बोल ही पड़ा|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हर लड़की ऐसी नहीं होती यार, आज भी कुछ लड़कियां शादी जिसे बंधन समझते हो तुम लोग उस पर ऐतबार करती है|" दीपांकर बोलकर वहां से चला गया आगे|

“लो अब इसे क्या हो गया| यह भी खनक की केटेगरी का ही है| चलो, चलते हैं अब| वक़्त होने वाला है बोर्डिंग का|" दीक्षांत ने कहा|

और सब चल दिए| लड़कियां पहले ही आगे थीं बाकी और लड़कियों के साथ| जल्द ही सब भारत जाने के लिए उड़ गए थे| अपने देश में पहुंचकर पहले तो सबको थोडा सा अजीब लगा पर आखिर अपना देश अपना ही होता है | पांच मिनट में ही सब फिर से भारतीय थे| परिवार के साथ खुश......

“ दोस्त हो तो सब कुछ कितना होता है आसाँ....
जैसे कि खुदा ने सबसे बड़ी दुआ है दी ।”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

7.

कितनी अजीब बात थी न कि नीलेश को एक बार भी खनक का ख्याल ही नहीं आया और जब एक महीने बाद सब दोस्त मिले तो प्रीतेश के पूछने पर उसे आभास हुआ कि उसने उसे कॉल नहीं किया और ना ही उसे अपना यहाँ का नंबर दिया था जो वो करती|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

उसने तुरंत फ़ोन मिलाया पर वो नंबर बंद हो चुका था| उसने उसके ऑफिस का नंबर पता किया और वहां फ़ोन किया तो पता लगा कुछ दिन पहले ही उसका काम पूरा हो गया और वो चली गई| उसने दुबई की फ्लाइट करवाई थी| उसके आगे कुछ नहीं पता चल पाया| बहुत कोशिश की नीलेश ने लेकिन........तब उसे दीपांकर की बात याद आई| आज वाकई वो परेशान था|

फिर ऐसे ही वक़्त बीता और अगले साल तक उसकी शादी हो गई| फिर अगले चार सालों में बच्चे भी| और अब पांच साल कुछ समय पहले ही पूरे हुए थे कि अचानक उसे खनक एक कार में जाती दिखी| उसने पीछा किया और वहां पहुंचा जहाँ वो काम करती थी................ नहीं, बल्कि वो मालिक थी। ये उसका अपना इंस्टीट्युशन और ऑफिस था| नीलेश ने उसका नंबर लिया और सात दिन तक काफी हिम्मत करके उसको कॉल किया| तबसे अब तक खनक की नाराजगी की वजह नहीं समझ पा रहा था क्यूंकि, उसने नहीं सोचा था कि वाकई खनक उसे इतना प्यार करती है| उसे लगा था कि उसे आकर्षित करने के लिए ऐसा कर रही है| वो नहीं समझ पाया उसके मनोभावों को और उसके अंतर्मन की आवाज़ को| आज उसे उसका आईना दिखा दिया खनक ने| पर वो खनक से मिलेगा ज़रूर और अबकी बार उसको वाकई बहुत अज़ीज़ बना कर रहेगा| आखिर वो नीलेश है| ऐसे कैसे कोई यूँ ही उसकी बेईज्ज़ती कर देगा|

शायद थोड़ी देर का ही पछतावा था, फिर असली रंग आ गया बाहर, बीवी को देखते ही सब बातें भूल गया और......।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

अगले दिन फिर सुबह सुबह जॉगिंग करता हुआ फिर गाडी लेकर वो खनक के घर के दरवाज़े पर पहुँच गया|

टिंग डिंग ....

टिंग डिंग, टिंग डिंग.........

दरवाज़ा खुला:-

“आप फिर?” खनक ने देखते ही कहा|

“हाँ, एक दोस्त हूँ तुम्हारा| चाय पीने आया हूँ|" नीलेश ने जवाब दिया|

“ह्म्म्म, बैठिये|"

अन्दर बुलाया खनक ने और रसोई की तरफ चली गयी|

पानी का ग्लास लेकर आई और पकडाया, फिर बैठ गयी| बिना कुछ भूमिका बांधे बोली :-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“आप क्यूँ रोज़ परेशां होते हैं आकर, काम हो कुछ तो बता दीजिये|"

“काम तुम्हें पता है कि क्या है तो बेहतर रहेगा कि बता दो|"

“नीलेश जी, मुझे और भी बहुत काम हैं और आपने कहा था कि एक दोस्त की तरह आये हैं तो दोस्त की तरह बात कीजिये, जिगरी क्यूँ बन रहे हैं?"

“अच्छा बाबा, गलती हो गयी| और बताओ, कहाँ की तैय्यारी है?'

“ऑफिस की ही होती है इस वक़्त तो, आप चाय लेंगे?”

“हाँ, बना लो और साथ में रस्क ले आना यार| सीधा “जोग” के बाद यहीं आया हूँ|"

कुछ बोली नहीं बस गर्दन हिलाकर चली गयी खनक| नीलेश ने टीवी ऑन कर लिया और ऐसे ही चैनल बदलने लगा| थोड़ी देर में खनक ट्रे ले आई|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“लीजिये|”

नीलेश ने देखा खनक उसकी पसंद का पोहा और पनीर चीला बना कर लाई थी| बहुत अच्छा लगा उसे जब वो नाश्ता लाई तो, उसे वाकई बहुत भूख लगी थी|

“भगवन तुम्हें खुश रखे बालिके| एक भूखे का पेट भरा है तुमने, वो भी अतिस्वदिष्ट भोजन से| "

हंसी आ गयी खनक को उसकी नौटंकी देखकर| बोली :-

“भोजन नहीं नाश्ता, हाहा|"

“हाँ, हाँ वही| तुम समझ गयी न बस तो भगवान भी समझ जायेगा|”

और दोनों तेज़ तेज़ हंसने लगे|

“शुक्रिया खनक|”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अरे इसमें शुक्रिया की क्या बात है, अभी आपने ही कहा पूण्य मिलेगा|”

“हम्म्म्म.......... अच्छा, चलता हूँ अब| फिर मिलते हैं|'

“जी, ज़रूर|'

नीलेश अपने घर के लिए रवाना हुआ और खनक वापस अन्दर आकर नहाने की तैय्यारी करने लगी| उसे भी देर ना हो जाये| सोच रही थी कैसे उसने एक ऐसे इंसान को अपना सब कुछ मान लिया जिसे प्यार का मतलब ही नहीं पता। और इन्हीं सब ख़यालों के चलते वो अपने ऑफ़िस के लिए तैयार होने लगी।

“अब तो ये आलम है मेरे इश्क़ ए जुनून का यूँ.....

.....बस उम्र एक जी ली और हो रहे फ़ना!”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

8.

हालाँकि, आज उसका मन नहीं था जाने का। पर घर में भी क्या करेगी इसलिए निकल पड़ी। अभी अपनी कार तक पहुँची ही थी कि दिपांकर दिख गया।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हे! दीप।” खनक ने पुकारा। तो दीपाँकर ने पलट के देखा और अचंभित हो कर बोला :-

“खनक..... तुम..... यहाँ, मतलब व्हाट ए सर्प्राइज़ यार।”

“ हाँजी, मैं ही हूँ और तुम बताओ कैसे हो? कहा थे इतने दिन? तुम्हें भी याद नहीं आई मेरी, बस उन पंद्रह दिनों की ही दोस्ती थी।”

“अरे नहीं खनक, ऐसा कुछ नहीं है। बस सिर्फ़ इसलिए नहीं किया क्यूँकि चाहता था कभी मिल लो हक़ीक़त में ही।”

“अच्छा, मतलब क्या मैं ख्वाबों में मिलती हूँ....हाहा तुम भी ना, अच्छा मजाक कर लेते हो|"

“सच में, तुमसे ख्वाबों में तो मिलता ही रहता था, तुमसे सीखना जो था,इतना जिंदादिल रहने का हुनर क्यूंकि, जबसे तुमसे मिला था| जिंदगी के प्रति मेरी सोच बदल गयी और शानदार बदलाव आया(अच्छे में) |”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“कैसे......................?"

“वो छोडो, ये बताओ कहाँ हो आजकल?"

“कहाँ मतलब, यहीं हूँ... अपना खुद का एक इंस्टिट्यूट है और बहुत सही चल भी रहा है| बाकी एजुकेशन के फील्ड में ही हूँ| तुमने बताया था कि तुम चार्टर्ड अकाउंटेंट हो, तो कहाँ है तुम्हारा ऑफिस?"

“ओह! आई एम् सो ग्लैड यू रिमेम्बरड| हाँ और अब अपना खुद का ऑफिस खोल लिया है| अच्छी प्रैक्टिस चल रही है|"

“अरे वाह, ये तो बहुत ही शानदार बात है| तो पार्टी तो बनती है| हहहः|"

उसकी बातों का, उसकी शख्शियत का दीपांकर पहले से ही कायल था और अभी जिस तरह से उसने इतने हक से एक दोस्त की तरह बात की, उसे लगा ही नहीं कि इतने साल बाद मिला है उससे| कितनी बेबाक, निश्छल है खनक|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“और तुम बताओ, क्या चल रहा है और आजकल काम के अलावा क्या कर रही हो? शादी की या नहीं अभी तक?" दीपांकर ने बात आगे बढाई|

“हाहा, सही है मजाक कर लो| पर अभी मूड नहीं बना|”

“तो कब बनेगा मूड मैडम..........वक़्त निकल रहा है|"

दीपांकर ने छेड़ा|

“अच्छा, तुम्हें बड़ी चिंता हो रही है .. ह्म्म्म, अच्छा है| खैर मेरी छोडो, अपने बारे में बताओ| बीवी क्या करती है? बच्चे कितने बड़े हैं? कौनसे स्कूल मैं हैं?"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“बस, बस, बस...........रुको| पहले शादी तो करने दो फिर बच्चों का भी सोच लेंगे कहाँ पढ़ाना है|"

“क्या? तुमने अभी तक शादी नहीं की?" खनक को झटका लगा हो जैसे| फिर आगे बोली:- “पर क्यूँ नहीं की? और मुझे ज्ञान दे रहे हो|" एक भौ चढाते हुए खनक आगे बोली|

“हम्मम, सच कहूं....तुम्हारे जैसी मिली नहीं अभी तक, बस इसलिये नहीं की|"

दीपांकर ने जवाब दिया|

“कुछ भी,हम्म!" खनक ने हाथ हवा में हिलाते हुए कहा|तो दीपांकर ने कोई जवाब नहीं दिया पहले तो , फिर बोला :-

“कहीं चल कर बैठें और कुछ खाएं?"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हाँ ठीक है मेरे घर ही चलते हैं फिर|" खनक ने जवाब दिया|

“पक्का|" दीपांकर ने पूछा|

“हाँ दीप, बिलकुल पक्का| अच्छा लगेगा मुझे| बहुत दिनों बाद किसी दोस्त के साथ चाय पीने और ....”

“..........पकोड़े खाने का मज़ा ही कुछ और है, है ना?" दीपांकर ने उसका कथन पूरा किया|

फिर दोनों ने हवा में "हाई फाइव" किया और चल पड़े अपनी गाडी की तरफ| दोनों की गाड़ियाँ अलग अलग थी इसलिए दीपांकर उसके पीछे पीछे चला रहा था क्यूंकि, वो जानता नहीं था कि खनक कहाँ रहती है|आधे घंटे में वो लोग खनक के घर पहुँच गए| गाड़ियाँ पार्किंग में खड़ी करके दोनों अन्दर आये| दरवाज़ा खुला ही रहने दिया दीपांकर ने|

“ए सी चला लो, दरवाज़ा बंद कर देना पहले पर|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“नहीं ऐसे ही ठीक है, पंखा चल तो रहा है खिडकियों से भी अच्छी हवा आ रही है|" दीपांकर ने जवाब दिया|

“आई ट्रस्ट यू दीप|” रसोई से झाँक कर खनक ने कहा|

“आई एम हौनर्ड लेकिन फिर भी ऐसे ज्यादा सही है|"

“ दीप, कहीं तुम्हें मुझसे तो डर नहीं लग रहा| न न मैं परेशां नहीं करुँगी , पक्का|" खनक ने चुहल की|

बहुत तेज़ हँसा दीपांकर और खनक ने भी उसका साथ दिया| फिर चाय बना कर ले आई और एक प्याला उसे थमाया और साथ में ब्रेड रोल और मिर्च, प्याज़, आलू, बैंगन, गोभी के मिक्स पकोड़े भी|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अरे चटनी ले आऊँ ज़रा फिर इत्मीनान से बैठेंगे|” कहकर फिर से रसोई में चली गयी और साथ में स्रिराचा सौस भी ले आई|

“आई लव दिस सौस| अमेजिंग दैट यू हैव इट|" दीपांकर लगभग बोतल छीनता हुआ बोला|

“मुझे भी बहुत पसंद है, तभी तो है घर में| अच्छा अब खालो ठन्डे हो रहे हैं .... पकोड़े|" खनक ने हँसते हुए कहा|

“ हाँ, हाँ तुम भी खाओ फिर एक पकोड़ा चटनी में डुबोकर मूँह में डालते हुए बोला :-

“आज भी उतना ही स्वादिष्ट, एकदम नापा तुला सब कुछ| कमाल हो यार तुम|"

“तुम्हें आज तक याद है मैंने क्या बनाया था और स्वाद कैसा था?”

“बेशक!!!!"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

खनक बहुत खुश हुई और उसे देखने लगी| ना चाहते हुए भी दीपांकर की बातें उसके दिल को छू रही थी| फिर एक टीस सी उठी कि काश ऐसा ईश ने सोचा होता| पर उन्हें तो कुछ याद नहीं| उनके लिए तो खिलौना थी वो......शायद|

“कहाँ खो गयी खनक, ठंडी हो गयी चाय भी तुम्हारी|'

खनक मुस्कुराई बस पर बोली कुछ नहीं| फिर दोनों इधर उधर की बातें करने लगे| अब दीपांकर ने जाने का सोचा|

“अच्छा, चलता हूँ| बहुत शुक्रिया इतने अच्छे वक़्त के लिए|"

“दोस्त हैं हम दीप, शुक्रिया कैसा| ध्यान से पहुँचो और मेसेज कर देना|"

“ह्म्म्म............|'

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“कुछ इस तरह से यूँ मुझे ख़ामोश कर दिया....

अब ख़ुद से ही बतियाने से डरने लगे हैं हम !!!!”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

9.

दीपांकर निकलने ही वाला था कि नीलेश ने अन्दर प्रवेश किया|

“खनक ये दरवाज़ा क्यूँ खुला है?” बंद करने ही वाला था कि उसकी नज़र दीपांकर पर पड़ी|

“अरे दीपांकर, तुम यहाँ? कब आये? मतलब मुझे तो अनुमान ही नहीं कि तुम भी यहाँ हो|” फिर उसको ध्यान से देखकर बोला:- "लगता है, जा रहे हो वापस|"

दीपांकर कुछ कहता उससे पहले ही खनक बोल उठी:-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“नहीं, नहीं अभी बस पांच मिनट पहले ही आया है| आज रास्ते में मिला था तो बुलाया था मैंने रात के खाने पर|"

दीपांकर को कुछ समझ नहीं आया पर ये ज़रूर आ गया कि खनक चाहती थी वो रुक जाये| इसलिए उसने भी कह :-

“तुम्हें भी आज ही मिली क्या खनक? मुझे तो यकीन ही नहीं हुआ कि हम पांच साल बाद मिले हैं और इतना बढ़िया खाना बनाती है ये, मैं कोई पागल हूँ जो नहीं आता| बस पूछ रहा था कुछ लाना हो तो अभी बता दो वरना मैं आराम से बैठूं|"

नीलेश की आखों में इर्ष्या की झलक साफ़ दिखाई दे रही थी| दीपांकर ने ये महसूस किया और खनक की आँखों में उसे लेकर रोष और असुरक्षा दिखी, वो समझने की कोशिश कर रहा था अभी कि आखिर माजरा क्या है?

“चलिए बैठते हैं....." खनक ने कहा तो सब चल दिए अन्दर| नीलेश ने टीवी का रिमोट उठाया और चैनल बदलने लगा| दीपांकर भी उसके पास आकर बैठ गया| खनक पानी ले आई थी तब तक| फिर वही बैठ गई वो भी|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“और कैसे आना हुआ?" नीलेश ने दीपांकर से पूछा|

“बस वैसे ही जैसे तुम्हारा हुआ|" दीपांकर ने जवाब दिया|

“मतलब?" नीलेश ने विस्मित होकर पूछा|तो दीपांकर ने भी तुरंत जवाब दिया:-

“मतलब ये कि जिस कारण तुम आए हो, उसी कारण मैं भी आया हूँ........खनक से मिलने, दोस्त है ना? क्यूँ गलत कह रहा हूँ?"

“नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है| सही कह रहे हो तुम बस मुझे लगा........."

“क्या लगा?" बीच में ही बात काटते हुए दीपांकर ने कहा|

“नहीं, कुछ नहीं|" खिसिया गया नीलेश, उसे समझ नहीं आया कि अब इस बात का क्या जवाब दे| इतने में ही दीपांकर खनक से बोला :-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अच्छा, एक बात सुनो, तुम ना कुछ मत बनाओ आज बाहर चलते हैं| मौसम भी अच्छा है और काफी दिन से सब दोस्त मिले भी नहीं| मैं बुला लेता हूँ सबको| तुम्हारे हाथ का खाना फिर कभी कहेंगे , अब तो तुम यहीं हो न?"

“हाँ, अब यहीं हूँ, तो रात का खाना बाद के लिए उधार रहा|" खनक हँसते हुए बोली| नीलेश से ये सब बिलकुल नहीं बर्दाश्त हो पा रहा था कि खनक किसी से इतना हंस कर बात कर रही है| वो दीपांकर से बोला :-

“लगता है अच्छी दोस्ती हो गयी है तुम दोनों में, हम्मम बढ़िया है|" दीपांकर कुछ कह पाता, इतने में ही खनक आ गयी| तो नीलेश बोला :-

“खनक मुझे तुमसे कुछ बात करनी है, एक मिनट ज़रा इधर सुनना|"

“क्या बात करनी है? आप दीप के सामने ही बोल दीजिये|" खनक ने पलटवार किया|

“नहीं बस तुमसे करनी है, प्लीज|” नीलेश ने कहा| दो पल के लिए रुकी खनक फिर बोली :-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ठीक है, आइये यहाँ बालकनी में बैठकर बात करते हैं| दीप तब तक तुम टीवी देख लो|" मुस्कुराकर खनक ने कहा|

“ओके बॉस|एज पर योर आर्डर|" और सल्यूट का इशारा करके चला गया कमरे में टीवी देखने|खनक और नीलेश बाहर आकर बैठ गए| खनक एक बोतल पानी भी ले आई थी|

“बोलिए, क्या बात करना चाहते थे आप?”

“तुम कुछ ज्यादा ही बेबाक नहीं हो रही दीपांकर के साथ?"

“अच्छा........... हहहः, ये आप कह रहे हैं| आपसे बहुत कम हूँ सर जी|आपका कोई हक नहीं बनता मुझ पर या मेरे जिंदगी के फैसलों पर| दोस्त हो ना आप, तो बस वो ही रहिये| जिगरी ना बनिए|"

“हद होती है खनक, हर बात की| क्या मिलेगा ये सब करके तुम्हें|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“आप भूल रहे हैं शायद कि आप शादीशुदा हैं और एक नहीं दो बच्चों के पापा भी हैं, तो कृपया मर्यादा में रहिये|"

“खनक प्लीज, मत कहा करो ऐसे| तुम नहीं जानती किन स्थितियों में...|”

“हहहः, बच्चे पैदा हुए, एक नहीं दो.... ह्म्म्म वाकई कमाल परिस्थिति है आपकी|” खनक उठ कर जाने लगी तो नीलेश ने उसका हाथ थाम लिया| झटके से छुड़ाया खनक ने हाथ अपना और बोली :-

“माना बहुत प्यार किया है आपसे पर इतनी सस्ती नहीं हूँ मैं, खबरदार जो दुबारा ऐसा करने की कोशिश की|" और बस निकल गयी बाहर|

“क्या हुआ खनक, तुम रो रही हो| सब ठीक है न?" दीपांकर ने उसे देखते ही पूछा|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हां, सब ठीक है| तुम्हें कोई तकलीफ ? दोस्त ही हो न|अगर टीवी देख लिया हो तो चले बाहर?" खनक के जवाब देने से पहले ही नीलेश ने जवाब दिया| कुछ समझ पाता दीपांकर , उससे पहले खनक ने कहा :-

“दोस्त नहीं, जिगरी हैं मेरा| आपको कोई तकलीफ?” इतना सुनने के बाद नीलेश से रहा नहीं गया और वो बस निकल गया बाहर| पीछे पीछे दीपांकर और खनक|

“कहाँ चल रहे हैं हम?" गाडी में बैठते ही खनक ने पूछा |तो नीलेश बोला :-

“दीपांकर बताएगा, आज उसी का मन है खाने का बाहर|"

“हाँ तो दीपांकर बताओ, कहाँ चल रहे हैं हम|" चहकते हुए खनक ने पूछा तो दीपांकर ने कहा :-

“सब्र मैडम जी, इंतज़ार करो........... सर......प्राइज, हहहः|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अच्छा ठीक है, ले चलो जहाँ चलना है| मुझे तो खाना खाना है बस|"

“तुम तो ऐसे रियेक्ट कर रही हो जैसे पहली बार जा रही हो बाहर|" नीलेश ने थोडा चिढ़ते हुए कहा|

“अरे, नहीं नहीं ऐसा नहीं है कि पहली बार जा रही हूँ|पर हाँ, दोस्तों के साथ बहुत समय बाद जा रही हूँ ना इसलिए|"

“ह्म्मम्म्ममम्म्म.................|" बस इतना ही कहा नीलेश ने और गाडी चलाने लगा| जब ख़ामोशी सी छा गयी तो दीपांकर बोला :-

“अच्छा, एक बात बताओ खनक, तुम्हारे ऑफिस में छुट्टी कब होती है?”

“मेरी छुट्टी....हेहे गुड क्वेश्चन|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“क्यूँ क्या कोई काम है तुम्हें?" फिर से नीलेश बोला बीच में| अब दीपांकर को आखिर बोलना ही पड़ा जो इतनी देर से सोच रहा था:-

“तुम्हारे पेट में क्यूँ दर्द हो जाता है , मैं कुछ भी पूछता हूँ खनक से तो? दिक्कत क्या है तुम्हें?"

“मुझे क्यूँ दिक्कत होगी?” नीलेश ने कहा|

“वो तो तुम ही बताओगे ना|" दीपांकर ने पलटवार किया|

“नहीं कोई बात नहीं है, कुछ दर्द नहीं करता मेरा| पूछ लो जो पूछना है| जिगरी हो ना तुम तो|" नीलेश बोला|

“वो तो हूँ|" दीपांकर ने झूठमूठ कालर उठाने का नाटक किया| फिर खनक की तरफ पलटा ....

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हाँ तो, खनक बताओ? कब होती है........ छुट्टी तुम्हारी?”

“क्या पूछते हो तुम भी दीप, मालिक हूँ जब चाहे ले लूँ|”

“अरे वाह, ये तो बहुत बढ़िया रहेगा।”

“जब करवानी हो बता देना। ठीक है।”

“पर्फ़ेक्ट।” दीपांकर ने खुश होते हुए कहा|

वो लोग पहुँच गए थे और नीलेश गाड़ी पार्क कर रहा था| वहाँ पहुँचकर खनक को जो सर्प्राइज़ मिला वो सोच नहीं सकती थी| उसके सारे “आठ” दोस्त मतलब उसका कॉलेज ग्रूप जिनसे वो प्राग में मिली थी, सब वहाँ थे| वो इतना तेज़ (ख़ुशी में) चीख़ी कि आजू बाज़ू के लोग भी देखने लगे|

“ओह्ह्ह माइईईई गॉड। तुम सब यहाँ। यक़ीन ही नहीं हो पा रहा।”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ जैसे ही दीपांकर का फ़ोन आया और उसने बताया , बस तुरंत हम सबने हाँ कर दी। आख़िर पाँच साल से नहीं मिले थे यार।” नीलाक्षी ने कहा।

“दीप, ...।” और कुछ नहीं बोल पाई खनक। पर दीपांकर उसकी अनकही समझ गया। तुरंत बोला :-

“ अच्छा ठीक है गाइज़, अंदर बैठ के बातें करते हैं ना। बहुत भूख लगी है.......... खनक को।” और हँसने लगा।

“अरे नीलेश, तुम। अच्छा तो अब समझ आया कहाँ गायब थे तुम भी इतने साल। बताया क्यूँ नहीं शादी कर ली? हम भी आते तो गिफ़्ट देकर जाते। पैसे भी बचते। दोनो दोस्त को एक साथ।” काव्या ने नीलेश को देखते ही कहा।

उसकी बातों में अपने शब्द जोड़ते हुए दीपांकर ने कहा :-

“सिर्फ शादी ही नहीं की बाल्की, अब तो दो बच्चों का पापा भी है हमारा नीलेश|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ नहीं, वो सब इतनी जल्दी में हुआ कि बस हो गई।” नीलेश ने जवाब दिया।

“क्यूँ भाई इतनी गड़बड़ कर ली थी क्या जो इतनी जल्दबाज़ी में की? प्राग का बदला हमम्म।” आँख मिचकाते हुए दीक्षान्त बोला और फिर खनक की तरफ़ देखकर बोला:-

“ कब की शादी। आख़िर हो गया सपना पूरा तुम्हारा। लकी गर्ल।”

“हाहाहाहाहा, होगी तो ज़रूर बताऊँगी दीक्षान्त जी पर हाँ ये सही कहा की लकी हूँ मैं।”

सब एकदम सकते में आ गए। उन्हें समझ नहीं आया कि कैसे रीऐक्ट करें। तो प्रांजलि बोली :-

“अच्छा कोई नहीं, कोई बहुत स्पेशल होगा हमारी खनक के लिए। तभी तो अभी तक वैसी ही है और हम सबको देखो, बूढ़े लगने लगे हैं।”

कहकर ऐसा मूँह बनाया कि सब हँसने लगे। फिर यहाँ वहाँ की बातें करने लगे और खाने गाने का दौर चल निकला। लगभग तीन घंटे सब साथ रहे और फिर अपने अपने गंतव्य के

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

लिए रवाना हो लिए। सब जानते थे अब तो मिलना होता ही रहेगा और फ़ोन नम्बर भी ले लिए थे।

“ दीप, तुम मुझे छोड़ दोगे ना।” खनक ने कहा।

“हाँ, घर तक छोड़ दूंगा ज़रूर मैं तुम्हारे साथ ही चल रहा हूँ। गाड़ी घर पर ही खड़ी है तुम्हारे।”

“अरे हाँ, दिमाग़ से निकल गया।” जैसे सुकून की साँस आयी हो खनक को।

“बैठो गाड़ी में छोड़ देता हूँ। “ नीलेश अपनी गाड़ी ले आया था तब तक।

“ थैंक यू सो मच यार, मेरी गाड़ी भी खनक के यहाँ ही खड़ी है।” दीपांकर ने कहा तो थोड़ा चिढ़ गया नीलेश पर कोई उपाय नहीं था उसके पास। खनक के घर पहुँचकर नीलेश ने बाहर से ही “फिर मिलेंगे” कह दिया। चाबी उसकी जेब में ही थी। फिर नीलेश के साथ साथ निकल गया। खनक अपने घर में आज मुस्कुराती हुई दाख़िल हुई। ऐसा लग रहा था जैसे पता नहीं कितने दिनो बाद बहार आयी है। उसका मन झूमने नाचने का कर रहा था। और आज कारण “ईश” नहीं था।

“ सोचा ना था कभी ऐसा मोड़ भी आएगा फिर से……

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

झूमने गुनगुनाने लगेगी ख़ामोशी भी ………. फिर से।”

10.

“हर पल ऐसे रहते हैं वो ख्यालों में यूँ……….

मैं खुद का होकर भी खुद में नहीं अब|"

सुबह के आठ बज रहे थे। नीलेश उठा और बाहर बालकनी में आकर बैठ गया| तृष्णा ने चाय लाकर दे दी उसे| अखबार उसके सामने रख गयी| पर नीलेश ने किसी पर ध्यान नहीं दिया| वो बस ये सोच रहा था कि कैसे इतना बदल सकती है खनक| कितना प्यार करता है वो उसे पर वो समझती ही नहीं| बस खफा होकर बैठी है|कैसे मनाऊ, कैसे समझाऊ…. सब सोच के परे है| ऐसा क्या गुनाह कर दिया मैंने….. बस उसकी जगह किसी और को अपना लिया| ये कोई गुनाह तो नहीं? फिर क्यूँ? आखिर क्यूँ इतनी कडवाहट भर गयी है

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

उसमें? ऐसे हज़ारों, करोड़ों, अनगिनत सवाल उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे पर निष्कर्ष एक ही निकलता था................पता नहीं|

क्या करूँ, कैसे कहूँ, क्या बोलूँ, कहाँ पर इन सब सवालों का हल मिलेगा| नहीं जिया जा रहा अब खनक के बिना.........या कि उसके अहम् को चोट लगी है| इस सवाल का जवाब खुद उसके पास भी नहीं था| लेकिन, हमेशा से उसने जो चाहा वो उसे मिला है तो आज ऐसा कैसे हो सकता है| नहीं वो ऐसा नहीं होने देगा| वो उसके अलावा किसी और को नहीं सोच सकती| पर क्या वो खुद ऐसा कर पा रहा है? तो फिर क्यूँ वो किसी और से अपेक्षा रखता है? क्यूँ उसे ऐसा लगता है कि उसके लिए सब जायज़ है और दूसरा सिर्फ उसका सुने, सोचे, समझे......??

नहीं इतना स्वार्थी होना उसके लिए अच्छा नहीं पर वो नहीं बदल सकता वो ऐसा ही है| वो जानता है खनक उससे प्यार करती है और शादी भी उसी से करना चाहती थी तो अब ऐसे नहीं जा सकती| लेकिन, वो खुद दोनों को प्यार करता है| ना वो तृष्णा कके बिना जी रह सकता है और ना ही खनक को छोड़ना चाहता है| लोगों के दो पत्नियाँ भी तो होती हैं| बस समाज में हक नहीं मिल पायेगा बाकी सारी इच्छाएं पूरी करेगा वो उसकी|कुछ भी करके मना लेगा उसे|

“नाश्ता तैयार है, आ जाओ|" अन्दर से आवाज़ आई|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हाँ, आता हूँ| लगाओ|" उसने जवाब दिया| इतने में ही तृष्णा बाहर आ गयी बर्तन लेने तो देखा चाय का प्याला वैसा ही रखा है जैसा वो रख के गयी थी|

“क्या हुआ, तबियत तो ठीक है?" उसने पूछा|

“हाँ, ठीक है|"

“तो चाय क्यूँ नहीं पी?"

“गुनाह हो गया क्या कोई? नहीं मन किया , नहीं पी ..... बस|"

“हाँ ठीक है पर गुस्सा क्यों हो रहे हो?"

“ऐसा है नाश्ता तुम लोग ही कर लो, मैं जा रहा हूँ यहाँ से|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

कहकर गुस्से में उठा और अपने कमरे की तरफ चल दिया|पीछे पीछे तृष्णा भी गयी और बोली:-

“अरे सुनो तो, क्या हुआ बताओ तो? क्यूँ इतना मूड ख़राब कर रखा है सुबह से? रात को तो सब ठीक था| क्या दोबारा करना..........|" छेड़ने के इरादे से तृष्णा ने कहा तो नीलेश ने झिड़क दिया उसे| एकदम से चिल्ला उठा :-

“और कुछ काम नहीं है क्या? क्यूँ मुझे परेशां कर रखा है? बक्श दो यार|"

अब तृष्णा को गुस्सा आ गया क्यूंकि ऐसा कभी नहीं किया था नीलेश ने उसके साथ| वो भी पलट कर बोली :-

“क्यूँ? अब वो वापस आ गयी है इसलिए? उसने शादी की या नहीं की? या आपको फंसाने के इरादे हैं अभी भी?"

नीलेश का गुस्सा आपे से बाहर था| बिदक गया, बोला:-

“एक शब्द फालतू मत बोलना और, मेरी किस्मत ही ख़राब थी जो तुम जैसी पल्ले पड़ी वरना आज कहानी कुछ और होती|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“तो सुधारना चाहते हैं गलती, हमारे बच्चे हैं...गलती हैं क्या? रोज़ रात जो होता है....गलती है क्या? आखिर कहना क्या चाहते हैं आप?"

“मैं कुछ नहीं कहना चाहता , मुझे कुछ देर अकेला छोड़ दो|"

दोनों हाथ जोड़ते हुए बोला नीलेश| कुछ और नहीं बोली फिर तृष्णा ,बस उसके सर पर हाथ फेर कर बाहर चली गयी| ये कहते हुए :--

“मुझे भी भूख लगी है, जल्दी आना |"

कुछ नहीं कहा नीलेश ने बस सर पे हाथ रखकर बैठ गया| लगभग एक घंटे बाद बाहर गया तो देखा अभी भी उसका और तृष्णा का नाश्ता रखा है| उसने इधर उधर देखा| तृष्णा दिखी नहीं कहीं, रसोई की तरफ गया तो वहां थी | उसने जाकर पीछे से उसे पकड़ लिया और गाल को चूम लिया और बोला :-

“भूख लगी है...|”उसकी आँखों की शरारत समझ रही थी तृष्णा| बोली :-

“मुझे भी |" फिर बाहर निकले रसोई से दोनों और अपने कमरे में चले गए|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

11.

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“आज थोडा और खो दिया है उन्हें......

आज थोडा और दूर हो गए वो .... हमसे|"

नीलेश तृष्णा से प्यार करता है या नहीं, यह वह खुद ही नहीं जानता पर इतना जानता है कि वो उसके बिना नहीं रह पायेगा| और खनक को बस उसे पाना है क्यूंकि खनक ने उसके अहम् को चोट पहुंचाई और उसे ठुकरा दिया| जब खनक सिर्फ उससे प्यार करती थी तो फिर ऐसे कैसे अब बदल गयी| माना शादी नहीं की उसने पर .... ऐसे ही ऊल जुलूल से विचार दिमाग में घूमते रहे|

“गुड मोर्निंग!" तृष्णा की आवाज़ से वर्तमान में लौटा नीलेश|

‘आह! गुड मोर्निंग बीवी|" नीलेश ने भी वैसे ही चहकते हुए जवाब दिया|

“चाय लीजिये|”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हम्म, अच्छा, मीठी करके पिला दो|" शरारती लहजे में नीलेश बोला तो शर्मा गयी तृष्णा| नीलेश मुस्कुराया और फिर पूछा :-

“आज अखबार नहीं आया क्या?"

“अभी नहीं आया , शायद, बारिश की वजह से देर हो गई है|"

“हम्मम|"

“नाश्ते में क्या बनाऊ आज?" तृष्णा ने पूछा|

“आज जल्दी निकलना है, नाश्ता बाहर ही करूँगा|लंच तक आ जाऊ शायद|”

“कहाँ जाना है?”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ऐसे ही काम है किसीसे मिलने|"

“खनक से?"

नीलेश ने कोई जवाब नहीं दिया| प्याला रखकर और बस उठकर बाथरूम की तरफ चला गया|

“ये ठीक नहीं है नील, आप क्यूँ मिलते हो उससे? मुझमें कोई कमी आ गई है क्या?”

फिर भी कोई जवाब नहीं दिया उसने| तृष्णा ने गुस्से में धीरे से ज़मीन पर पैर मारा और खाली प्याला लेकर बाहर चली गयी| थोड़ी देर में नीलेश आया निकल कर और जाने लगा| तो तृष्णा बोली :-

“मैं भी चलूँ आपके साथ? मिल लुंगी आपकी दोस्त से|”

“क्या करना है मिल कर?"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

"देखना है बस उन्हें, बातें करनी है|"

नीलेश ने कुछ कहने के लिए मूंह खोला पर फिर चुप हो गया|तो तृष्णा फिर बोली:-

"तो कभी घर ही बुला लीजिये उन्हें|"

"मैं चलता हूँ|"

कहकर निकल गया नीलेश| उसे तृष्णा की किसी भी बात का जवाब देना उचित नहीं लगा| उसे बस खनक से मिलना था और वो बिलकुल देर नहीं करना चाहता था| सोचा आज उसके लिए "फूल" लेकर चले| तो उसने खूबसूरत गुलाब लिए और गाडी दौड़ा दी खनक के घर की तरफ| आज वो उसे मना कर ही रहेगा| घर के बाहर गाडी रोकी और अन्दर चला गया सीधे| खनक सोफे पर बैठी चाय पी रही थी और अखबार पढ़ रही थी| उसने एकदम उसके सामने जाकर फूल रख दिए| एकदम से उछल पड़ी खनक| फिर नीलेश को देखकर बोली:-

"ऐसे कोई डराता है क्या ईश? हद करते हैं आप भी|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“अहां! आज तुमने मुझे मेरे नाम से पुकारा| शुक्रिया|"

कुछ नहीं बोली खनक बस शांत रही|

“अच्छा क्या बनाया है आज नाश्ता, भूख लगी है बहुत और तुम्हारे हाथ का खाना खाना मतलब.....वाह|"

“बताइए क्या खायेंगे? बना देती हूँ|” मुस्कुराते हुए खनक ने पूछा|

“जो भी खाना हो बना लो, साथ ही करेंगे|"

“पर मुझे तो दीप के घर जाना है आज नाश्ते पर| आते ही होंगे लेने|"

“क्या?????????????” जैसे बहुत जोर का झटका लगा हो उसे| फिर थोडा संभल कर बोला:-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“बताया नहीं तुमने मुझे?"

“बताना ज़रूरी था क्या?"

“नहीं, पर फिर भी|"

“अब पता चल गया न| बताइए क्या खायेंगे?”

“कुछ नहीं, रहने दो| चाय पिला दो खाली|"

“ठीक है|" कहकर अन्दर चली गयी खनक| नीलेश को बहुत ज्यादा गुस्सा आ रहा था पर चाह कर भी कुछ कह नहीं पा रहा था|

इतने में खनक उसके लिए नाश्ता और चाय ले आई| मटर परांठा और उपमा| कमाल का बनाती है सच में, और इतनी जल्दी| पर वो चुपचाप खाने लगा| इतने में ही दरवाज़े की

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

घंटी बजी|

“दीप होगा|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

कहकर दरवाज़े तक गयी खनक|

“खुला तो था, तुम भी न|"

कहता हुआ दीपांकर खनक के साथ अन्दर दाखिल हुआ| नीलेश को देखते ही अचानक उसके मूँह से निकला :-

“कोइन्सिडेन्स अगेन।”

“हे! हेलो दीपांकर। कैसे हो?”

खनक अंदर तैयार होने चली गयी। और वो दोनो वहीं बैठ गये। नीलेश ने जवाब दिया:-

“अच्छा हूँ हमेशा कि तरह। तुम बताओ।”

“मैं भी अच्छा हूँ।”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ कहीं जा रहे हो? या ऐसे ही रास्ते में ब्रेक लिया।”

“खनक से मिलने ही आया था और पता लगा वो व्यस्त है आज| बाद में आ जाऊंगा कभी|” फिर रुक कर बोला........ "आज वैसे क्या है कोई ख़ास बात है जो नाश्ते पे ले जा रहे हो अपने घर?”

“कुछ नहीं बस ऐसे ही, माँ से मिलवाना था|”

मानो एक झटका लगा हो नीलेश को| उसे समझ नहीं आया कि क्यूँ मिलवाना है माँ से खनक को? आखिर क्या चल रहा है दोनों में? पर खामोश रहा, उसे अभी कुछ पूछना सही नहीं लगा|चलने के लिए उठा और दीपांकर को बोला:-

“चलो तुम लोग भी वक़्त से निकलो| मैं चलता हूँ|" उसने हाथ मिलाया और निकल गया|

खनक तैयार होकर आई तो दीपांकर उसे देखता ही रह गया| बेहद खूबसूरत तो कभी नहीं थी वो पर उसको पहनने का सलीका था और तेजस्वी लगती थी जो उसे खूबसूरत बनाता था| दीपांकर ने आज तक उसे भारतीय परिधान में नहीं देखा था| और आज ......

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“वाह!”

खनक ने विचित्र मुद्रा बनाई और कंधे उचका के पुछा क्या हुआ|

“कुछ नहीं, चलें?"

“हाँ जी, ज़रूर| अच्छा, मैं ठीक लग रही हूँ न|"

“ह्म्म्म.....|" बिना उसकी तरफ देखे ही जब दीपांकर ने जवाब दिया तो खनक बोली:-

“देख तो लेते फिर बोलते|" और बस चुपचाप जाकर गाडी में बैठ गयी| दीपांकर को उसके बचपने पर हंसी आ गई जिसे उसने बड़ी मुश्किल से रोका|

“ दीप, सुनो! रास्ते से फ्रूट्स ले लेना|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“क्यूँ?"

“ले लेना ना|” खनक ने चिढ़ते हुए कहा| दीपांकर ने गर्दन हिला कर हामी भर दी| सब सामान, फल लेते हुए वो पहुंचे घर तो देखा माँ इंतजार ही कर रही थी| खनक ने उतारकर उनके पैर छुए और उनके साथ ही अन्दर चली गयी|

बहुत अच्छा लगा था खनक को आज वहां आकर| सब उससे इतना प्यार और अपनेपन से व्यवहार कर रहे थे जैसे कि उसी का घर है| उसे भी अपने माँ-पापा की याद आ गई जिनसे उसने सालों पहले रिश्ता तोड़ लिया था| वो भी नीलेश की वजह से| और अब जबसे नीलेश की सच्चाई पता चली हा, उसे खुद पर ही गुस्सा आता था कि क्यूँ उसने नहीं सोचा कि वो उसका इंतज़ार नहीं करेगा| अब किस मूंह से जाये उनके पास|वो यह सब सोच ही रही थी कि दीपांकर आकर अपनी माँ से बोला:-

“माँ! कुछ और लोग भी आये है|"

“अच्छा, बिठाओ मैं आती हूँ|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“जी।” और दीपांकर बाहर चला गया। उसकी माँ ने उठाकर अपनी साड़ी, पल्ला ठीक किया और खनक से बोली :-

“आओ बेटा, चलें।” और खनक को अपने साथ ले आईं बाहर, वहाँ सबको देखते ही जैसे स्तब्ध हो गयी खनक बस इतना ही निकल पाया मूँह से :-

“माँ..................पापा.................।”
और फिर दौड़कर उनके गले से लग गयी और बुरी तरह रोने लगी।

“मुझे माफ़ कर दो माँ। पापा मुझसे बहुत बड़ी ग़लती हो गयी थी पर मैं आप लोगों का सामना कैसे करती कि मैं हार गयी। मैं........।”

“बस बेटा। हमें तुझसे कोई शिकायत नहीं है। हम तो कबसे तेरा इंतज़ार कर रहे थे। राज़ी ख़ुशी पता चल जाती थी। उसी से तसल्ली कर लेते थे। वो तो कल दीप आया घर और उसने जब सब सच बताया और ये भी की तू आना चाहती है तो उसने आज यहाँ बुलाया हमें और हम आ गए। अब अपने घर चल ना बेटा।”

“ जी माँ। घर ही चलूँगी।”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

फिर दीपांकर की तरफ़ पलट कर बोली:-

"थैंक यू सो मच दीप। यू ड़ोंट नो व्हाट यू हैव गिवन टू मी। यू ओ एनीथिंग फ़्रम मी। वेनेवर यू आस्क।(बहुत शुक्रिया दीप। तुम्हें नहीं पता तुमने मुझे क्या दे दिया है। तुम मुझसे जोमांगोगे मैं दूँगी। जब भी चाहो कह देना।)"

" अभी कह दूँ?"

"हाँ, हाँ प्लीज़ बोलो ना।"

"अपने हाथ की शानदार चाय सबको पिलवा दो।"

और फिर हँसने लगा। सब उसके साथ उस हँसी में शामिल हो गए। बहुत दिनो बाद बेहद ख़ुश थी खनक। और उसके चेहरे पे इतनी बेसाख़्ता हँसी देख कर दीपांकर का चेहरा भी दमक उठा था। उसे वही पाँच साल पहले वाली खनक दिखाई दी थी आज। और एक बार फिर वो उसका दीवाना हो गया था।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

12.

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ कैसे हुआ अचानक यूँ बदलाव जिंदगी में...
हर पल कुछ नया महसूस करने लगे हैं हम।”

अपने माँ-पापा के पास वापस आकर खनक बहुत खुश थी| उसे ऐसा लगा जैसे उसके सारे दर्द ख़त्म हो गए और वो फिर से बच्ची बन गयी थी| माँ की गोद में सर रख कर सोना| पापा से सर पर तेल मालिश करवाना| सच में बहुत मिस करती तिथि वो ये सब|

वह अपने कमरे में बैठ कर बच्चों की रिपोर्ट्स देख रही थी जब उसका फ़ोन घनघना उठा| बिना नंबर देखे ही उठाया और बोली :_

“हाय! कैसे हो? इतनी देर में फ़ोन किया? भूल गए ?"

“अच्छा, तुम्हें भूल सकता हूँ क्या?"

"ओह! ईश ... कैसे हो आप?" खनक को एकदम आभास हुआ ये दीपांकर नहीं|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“तुम बताओ? मैं तो बिलकुल ठीक हूँ|"

“मैं भी बिलकुल ठीक हूँ|"

“तो कब मिल रही हो?"

“कुछ काम था क्या?"

“अरे, अभी तो इतना चहक के उठाया फ़ोन और फिर से ऐसी बातें|"

“ह्म्म्म, बताइए कुछ काम है क्या?"

“बस मिलना है| क्या यही काफी नहीं है?"

“सॉरी ईश, मैं व्यस्त हूँ थोडा|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ऐसा कितना व्यस्त हो? कल शाम घर गया था वहां भी नहीं थी तुम| तुम्हें तो सिर्फ सुबह के नाश्ते पर ही बुलाया था ना|"

“ हाँ, पर मैं अपने घर हूँ अब|"

“तो मैं कहाँ कह रहा हूँ कि किसी और के घर हो| अच्छा, बताओ न कब मिलोगी, अभी आ जाऊं|”

“ मैं उधर हूँ ही नहीं, मैं अपने घर में हूँ| माँ पापा के यहाँ|"

“ओह अच्छा, अच्छा| कब आओगी वापस?"

“क्यूँ? वापिस क्यूँ आना है? घर में हूँ अपने|'

“हाँ, पर तुम अलग रहती हो तो मैंने सोचा, शायद ....|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हाँ, पर अब सब ठीक है|थैंक्स टू दीपांकर|"

“अच्छा, अब ऐसा क्या किया उसने?” बहुत चिड कर बोला नीलेश|

“उसी के कारण मिल पाई हूँ|"

“हम्म्म, आजकल बड़े काम कर रहा है वो तुम्हारे लिए|”

बहुत तेज़ हंसी खनक| ऐसे जैसे कोई चुटकुला सुना हो उसने| बस इतना ही जवाब दिया :-

“अच्छा? हम्म्म.....|"

फिर थोड़ी देर रुक कर बोली:-

“मुझे कुछ काम है तो मैं बाद में बात करती हूँ| सी यू|"

कहकर वो रिसीवर रखने ही वाली थी कि नीलेश ने टोक दिया|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“क्या तुम्हारे पास बिलकुल वक़्त नहीं है मुझसे बात करने का?"

“नहीं ऐसी कोई बात नहीं है| मुझे वाकई ....|"

“काश, मैं इतना मूर्ख होता|”

“अरे! ऐसी कैसी बातें कर रहे हैं आप? ऐसा कुछ नहीं है|””

“हम्म्म्म! एक बार मिलना तो दूर बात तक करने का वक़्त नहीं अब तुम्हारे पास और कहाँ जा रही हो या रह रही हो, ये भी नहीं पता मुझे और कह रही हो ऐसा कुछ नहीं.... ह्म्म्म?"

“तो आप ही बताइए ना ईश.. नीलेश, किस रिश्ते से कहूं आपको कुछ अब?"

“क्यूँ अब क्या कोई नाता नहीं हम दोनों के बीच?"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“मुझसे बेहतर इसका जवाब आपको पता है। ख़ैर जाने दीजिए। बताइए क्या ज़रूरी काम है आपको?”

“एक बार बता दो कि कब तक इतना नाराज़ रहोगी?”

“क्यूँ बार बार एक ही बात पूछ रहे हैं आप? माँ बुला रही है मुझे जाना है।”

“ठीक है जाओ पर अपने पापा के घर का पता दे दो। आना है मुझे।”

खनक ने कुछ नहीं कहा सिवाय एक शब्द के:-

“नमस्ते।”

चिड़ गया था नीलेश पर क़ाबू रखा ख़ुद पर और दीपांकर का नम्बर घुमाया खनक का पता पाने के लिए। उसे पक्का यक़ीन था कि उसके पास ज़रूर मिलेगा। सोच रहा था कैसी विडम्बना है। जो कभी सिर्फ़ उसकी थी आज उसका पता किसी और से लेना पड़ रहा है।

“कहते हैं वो काँच है बिखरा, संभाल के चलें।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

पर गहरी पीड़ा जो है अंतर्मन में....

बताए कोई हम उसका क्या करें ?¿"

कुछ समझ नहीं आ रहा था नीलेश को कैसे वापस पाए वो खनक का प्यार। बहुत पछता रहा था वो और अपने परिवार से भी बहुत प्यार करता था वो इसलिए छोड़ भी नहीं सकता था। वैसे भी वो जानता था खनक सबसे अलग है वो कभी किसी के पति को नहीं छीनेगी। सिर्फ़ यही कारण है कि वो उससे दूर जा रही है पर इतनी दूर कि दोस्ती भी नहीं रखना चाहती? ये बात उसकी समझ से बाहर थी। पर उसने सोच लिया था, आज जाएगा वो उसके माँ पापा से मिलने।

13.

"किया जो भरोसा फिर से .....

तो कहीं बिखर ना जाएँ इस तरह से कुछ यूँ.....

ना हँस पाए, ना रो पाए

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

बस ख़ामोश हो गए ऐसे, कि

लब अब खुल ना पाए सिल गए हो ज्यूँ!!!!”

“खनक, खनऽऽऽऽक.... कहाँ हो?”

माँ आवाज़ लगा रही थी। और खनक मज़े से अपने घर के बाग़ीचे में बैठी फ़ोन पर किसी से बात कर रही थी।

अचानक माँ ने आकर झींझोड़ा।

“कितनी देर से आवाज़ लगा रही हूँ, सुनती क्यूँ नहीं?”

“सॉरी माँ! वो मैं दीप से बात कर रही थी।”

“अच्छा! उसने कुछ बताया नहीं ?”

“क्या बताना था माँ? कुछ ख़ास बात है क्या?”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“पता नहीं, नीचे उसके मम्मी-पापा आए हैं। आजा तू भी नीचे।”

एकदम से अवाक सी देखने लगी खनक अपनी माँ को, उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था| फिर हडबडा कर वो उठी और जल्दी से कपडे बदलने गयी|

माँ मुस्कुरा रही थी|

“आओ खनक बेटा, बैठो| कैसी हो? बहुत दिन से तुमसे बात नहीं हुई थी, देखा नहीं था इसलिए जब आज यहाँ से गुज़र रहे थे तो सोचा मिलते चलें|"

“जी बहुत अच्छा किया आंटी| आप दोनों ही आये हैं बस?"

दीपांकर की मम्मी मुस्कुराई और “हाँ" में गर्दन हिलाकर जवाब दिया|

“नहीं, मतलब, मेरा मतलब था कि मुझे कह दिया होता तो मैं ले आती आपको|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

"एक ही बात है बेटा|अगर दिक्कत होती तो ज़रूर कहते|" फिर थोडा सा रुक कर उन्होनें आगे कहा:- "एक बात बताओ बेटा, तुम्हें दीपांकर ठीक लगता है?"

नीची नज़रें किये खनक ने हामी में गर्दन हिलाई| फिर अचानक नज़रें उठाकर देखा मानो पूछ रही हो ऐसा क्यूँ पूछा। वो भी शायद समझ गयीं थी इसलिए ख़ुद से ही जवाब दिया :-

" सोच रही थी तुम दोनो साथ अच्छे लगते हो तो क्यूँ ना हमेशा के लिए साथ हो जाओ। ज़बरदस्ती नहीं है, तुम आराम से सोचो और अगर ठीक लगे तुम्हारे मन को तो ही हाँ करना वरना बच्ची तो तुम हमेशा ही रहोगी हमारी। हमारे रिश्ते में कभी कोई बदलाव नहीं आएगा। पर तुम ज़्यादा परेशान मत होना। मैं तुम्हारे जवाब का इंतज़ार करूँगी, जो भी हो..... बेझिझक कहना।"

"जी....जी आंटी|" बस इतना ही कह पाई खनक, वो सकते में थी|दिमाग सुन्न पड़ गया था जैसे| वो एकदम खामोश थी|

"क्या हुआ बेटा, तुम परेशां हो गई?" दीपांकर की माँ ने पूछा तो खनक ने कह :-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“नहीं आंटी ऐसी बात नहीं है| वो अचानक ऐसा कहा न आपने तो. बस और कुछ नहीं|"

“पक्का ?"

“जी|" उसकी तरफ से तसल्ली कर दीपांकर के माँ पापा ने कहा :-

“अब हमें घर निकलना चाहिए, देर हो जाएगी| खनक बेटा, तुम सोचकर बता देना|" और ये सब कहकर वो वहां से रुखसत हुए|

खनक के समझ नहीं आ रहा था फिर उसने सोचा एक बार बात करके देखेगी दीप से| आखिर ऐसा क्या हुआ कि आंटी ने ऐसा कहा या सोचा|एक बार मिलेगी तो पता चलेगा| ये सोचकर उसने उस वक़्त माँ-पापा के आगे ऐसा कुछ नहीं कहा कि उनका मूड ख़राब हो| अपने कमरे में जाकर उसने दीपांकर को फ़ोन मिलाया _ ट्रिंगग्गगग्गगग्गग, ट्रिंगग्गगग्गगग्गग...........

“हेल्लो मैडम|"

“कहाँ हो?" बिना भूमिका बांधे खनक ने कहा|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“क्या हुआ खनक, सब ठीक तो है?" थोडा परेशां हो गया दीपांकर|

“मिलो, फिर बात करते हैं| ठीक है तो कहाँ आऊँ?"

“जहाँ बोलो वहीँ आ जाओ|"

“ठीक है फिर तुम्हारे और मेरे घर के बीच में कहीं मिलते हैं|"

“ठीक है ‘सर्किल’ पर मिलते हैं|"

“ठीक है दस मिनट में मिलते हैं|” कहकर खनक ने फ़ोन रख दिया|

फिर खनक ने अपनी गाडी की चाबी उठाई और निकल पड़ी|कहते हुए :-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“माँ - पापा, आती हूँ थोड़ी देर में|"

“ठीक है बेटा, ध्यान रखना|”

“जी|"

बहुत गंभीर मुद्रा में थी खनक, कोई भी बता सकता था कि आज उसका मूड खराब है | भगवान् भी ना जाने कौनसे गुनाह की सजा दे रहा है| इतने में ही उसे दीपांकर की गाडी दिखी| वो फटाफट गाडी पार्क करके नीचे उतरी| दीपांकर भी लगभग दौड़ता हुआ सा आया|

“क्या बात है खनक? क्यूँ इतनी बदहवास सी थी तुम?”

“मुझे तुमसे कुछ पूछना है|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“हाँ , हाँ, बेझिझक पूछो।”

“आज तुम्हारे माँ – पापा घर आए थे।”

“हाँ, अभी उनका कॉल आया था तब बताया उन्होंने मुझे। हालाँकि, मैं ग़ुस्सा भी हुआ कि अकेले जाने के बजाय ले चलते मुझे या कह देते ड्राइवर कर देता। पहले ही तबियत ख़राब रहती है। कुछ नहीं समझते कभी कभी , बच्चों जैसे हरकतें करते हैं।”

“तुम्हें नहीं पता वी लोग क्यूँ आए थे?”

“मिलने आए होंगे तुमसे और क्यूँ आएँगे”

“ नहीं, मिलने नहीं आए थे।”

“अच्छा!” बड़े अचरज से कहा दीपांकर ने:- “फिर?”

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“वो लोग……..।”

पूरी कर भी नहीं पाई थी अपनी बात की नीलेश आ गया अचानक से।

“क्या बात है? आजकल बड़ा इधर उधर खड़े होते हो तुम लोग। घर या कैफ़े में ही बैठ जाया करो।” नीलेश बोला।

“हम कहीं भी खड़े हों और कुछ भी करें। आपको दिक्कत क्या है?” खनक ने खीज कर जवाब दिया।

“नहीं, नहीं मैडम बिलकुल दिक्कत नहीं पर, ऐसे सड़क पे खड़े होने से बेहतर है अंदर किसी कैफ़े में बैठ जाते।”

“आपकी राय के लिए बहुत शुक्रिया।”

“और तुम बताओ दीपांकर। बड़े मज़े में हो आजकल लगता है।”

“ मैं हमेशा ही मज़े में रहता हूँ। तुम्हें क्या दिक्कत हुई?” अब दीपांकर ने जवाब दिया था।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ चलो बढिया है किसी की तो ऐश है, वरना लोग तो मिलने क्या बात करने से भी मुकर जाते हैं।”

अब खनक अपना आप खो बैठी। पहले ही दिमाग़ ख़राब था और ऊपर से इन तानो ने और ज़्यादा दिमाग़ हिला दिया था। वो बोली :-

“ हम दोनों चाहे ऐश करें, चाहे बात करें। हक़ है हमारा क्यूँकि हम धोखा नहीं दे रहे एक दूसरे को और ना ही फ़ायदा उठा रहे हैं। शादी होने वाली गई हमारी। मंगेतर हैं हम। आपको क्या दिक्कत है? आप अपने घर जाइए ना।”

सकते में आ गया नीलेश, लड़खड़ा गया। उसे यक़ीन नहीं हो पाया इस बात का। दीपांकर ने सम्भाला उसे जबकि वो ख़ुद ही नहीं समझ पा रहा था कि माजरा क्या है?

“ संभाल के नीलेश! तुम ठीक तो हो?” दीपांकर ने पूछा।

“बस रहने दो।” नीलेश ने उसका हाथ पीछे कर दिया। फिर खनक से बोला:-

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“ तुम्हें पता है तुम क्या कर रही हो? तुम तो कहती थीं कि तुमने सिर्फ़ मुझसे प्यार किया और कभी किसी की नहीं हो सकती मैं। तो ये क्या है फिर?” और तेज़ तेज़ हँसने लगा नीलेश।

“ बस नीलेश। बहुत बेवक़ूफ़ बना लिया, अब बस कीजिये। कहा तो आपने भी था कि मेरा इंतज़ार करेंगे। लेकिन आप ...... शर्म आती है ये सोचते हुए भी कि मैंने ऐसे व्यक्ति को अपना आदर्श माना और उस से प्यार किया जिसे प्यार की परिभाषा ही नहीं पता। उसके लिए प्यार भौतिक और अस्थायी है और आत्मा या मन का उससे कोई लेना देना नहीं। उसके अहंकार को ठेस लगी जब उसने देखा की जो उसे प्यार करती है वो किसी और के साथ क्यूँ है? पर उसने ख़ुद को नहीं देखा कि वो ख़ुद क्या कर रहा है। वो दो दो औरतों की भावनाओं के साथ फ़ायदे उठाना चाह रहा था। और मैं ऐसी बेवक़ूफ़ हरगिज़ नहीं। बचपन का इश्क़ मरते दम तक साथ रहेगा पर मैं उसकी बीवी को उसके कर्मों की सज़ा नहीं दे सकती। अगर उसकी बीवी भी उसके साथ ऐसा करे तो कैसा लगे एक बार अगर वो सोचे तो शायद उन्हें समझ आए पर ऐसा कोई नहीं सोच पाता। स्वार्थी होता है इंसान। जो उसे ख़ुद को ठीक लगे वो ठीक बाक़ी दूसरा ऐसा करे तो क्यूँ? किसलिए? हाहा ...... कितने स्वार्थी हैं वो ये अब इतने सालों बाद मुझे पता लगा| वर्ना बेचारी एक मासूम औरत का घर उजाड़ने से भी बाज़ नहीं आते वो|"

फिर थोडा सा विराम लिया और नीलेश की और मुस्कुराकर देखते हुए बोली:-

“सोच लीजियेगा जैसे आपने किसी के साथ किया, अब आपके साथ भी वैसा ही हो रहा है|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

फिर दीपांकर का हाथ थामते हुए बोली:-

“चलिए दीप! घर पर सब इंतज़ार कर रहे होंगे| हमारी शादी होने वाली है|”

दीपांकर ने भी उसका हाथ थाम लिया और बोला:-

“चलो खनक! और नीलेश तुम्हें कार्ड देने ज़रूर आएंगे हम| शादी में आना ज़रूर|"

कहते हुए दीपांकर खनक का हाथ थामे आगे अपनी गाडी की तरफ बढ़ गया और उसमें बैठने ही वाला था कि नीलेश ने एक बार फिर आकर कहा:-

“तुम दोनों ऐसा करके कभी खुश नहीं रहोगे| किसी का दिल दुखाकर पाई गयी ख़ुशी कुछ ही वक़्त की होती है| तुम दोनों ने मेरे साथ विश्वासघात किया है|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“शुक्रिया! तहेदिल से आभार इस अहसास को समझने के लिए और हमें दुआएँ देने के लिए| नमस्कार, उम्मीद है इस जन्म में कभी मुलाक़ात नहीं होगी|"

ये कहकर खनक ने दरवाज़ा बंद कर लिया और दीपांकर ने गाडी आगे बढ़ा ली|

“कैसा तूफ़ान है आया आज इस जमीन ए रूह पे,

जिसके साथ थे अब साथ वो ही नहीं ....

...........और दुनिया खिलखिला रही|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

14.

दीपांकर और खनक बस ऐसे ही कुछ चक्कर लगाने लगे ताकि बातचीत हो सके| उसके बाद जाकर गाडी ले आयेंगे| पार्किंग में ही खड़ी थी|दीपांकर ने ही बातचीत की शुरुआत की:-

“खनक जो तुम कह रही थी वो सब क्या सच है?"

“तुम नहीं करना चाहते मुझसे शादी?"

“ऐसी बात नहीं है पर तुम क्या वाकई तैयार हो?”

“हाँ दीप! एंड क्रेडिट गोज टू वन एंड ओनली नीलेश जी| क्यूंकि जब मैं आई थी, मैं झगड़ने आई थी और नीलेश ने आकर सब कुछ ठीक कर दिया|

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

“सच में.........|" दीपांकर के बाकी के शब्द अन्दर ही रह गये|

पर वो बहुत बहुत बहुत खुश था क्यूंकि, उसने हमेशा खनक को प्यार किया है|और उसीके सपने देखे हैं| इतनी जल्दी उसका ये सपना सच हो जायेगा, उसने सोचा ना था|

वही खनक सोच रही थी| किसी की दुनिया में दूसरी औरत बनाने से बेहतर है, ईज्ज़त की जिंदगी जायज़ हक से जीने की आजादी| दीपांकर उसका सबसे करीबी दोस्त, उसका जिगरी है और उसके साथ अपनी पूरी जिंदगी जीना वाकई फख्र की बात है| वो फैसला ले चुकी थी और अब बस माँ - पापा और आंटी - अंकल को बताना है| अचानक भाव विह्वल हो गयी और दीपांकर का हाथ फिर से थामते हुए बोलीी:-

“दीप मेरी जिंदगी में आने और मुझे थामने के लिए बहुत शुक्रिया| हमेशा यूँ ही साथ देना और रहना, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो|"

“मैं हमेशा साथ निभाऊंगा| हमेशा, हमेशा , हमेशा............ आखिर मेरा सपना सच हुआ है|”

खनक भी पनीली आँखों से मुस्कुरा उठी तो दीपांकर ने गाडी रोकी और उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में लेकर उसके सारे आँसूओ को पी गया| और बोला:-

“ अब कभी नहीं खनक, मैं हूँ न|"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

आज खनक को लगा शायद उसका जन्म का असली उद्देश्य यही था जिसे उसने पहचानने में काफी देर कर दी| तभी हर जगह दीप उससे टकर जाता था, लेकिन अब सब निभाएगी, पूरी शिद्दत और इमानदारी से................................!

वो एकटक दीपांकर को देखे जा रही थी और दीपांकर भी मुस्कुरा रहा था|

"उसकी बातें सुनना, अपनी सुनाना,

उसके साथ हंसी-ठिठोली करना....

नाजुक रिश्ते बांधे रखना.....

उसकी होना, मुझे सब कुछ सिखा रहा है...

आहिस्ता - आहिस्ता !!!"

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

||इति ||

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

ऐसे ही दुर्लभ उपन्यास (Novel) ,

प्रेरणादायक पुस्तक

(Motivational Book) ,

प्रीमियम बुक , प्रीमियम मैगजीन ,

और अन्य सभी तरह के ,

कहीं पर भी ना मिल पाने वाले

उपन्यास

और साहित्य को पढ़ने के लिए हमारे

टेलीग्राम ग्रुप और चैनल में

अवश्य जुड़े ।

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से

आप हमारे ग्रुप और चैनल

में जुड़ सकते हैं

https://t.me/hindilibrary

https://t.me/requestbookpdf

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

चैनल में जुड़ने के लिए

लिंक पर Click करें👇👇👇

https://t.me/books_request

English Books 📚

https://t.me/Google_Ebooks